दादा भगवान गीता भगवान

ॐ

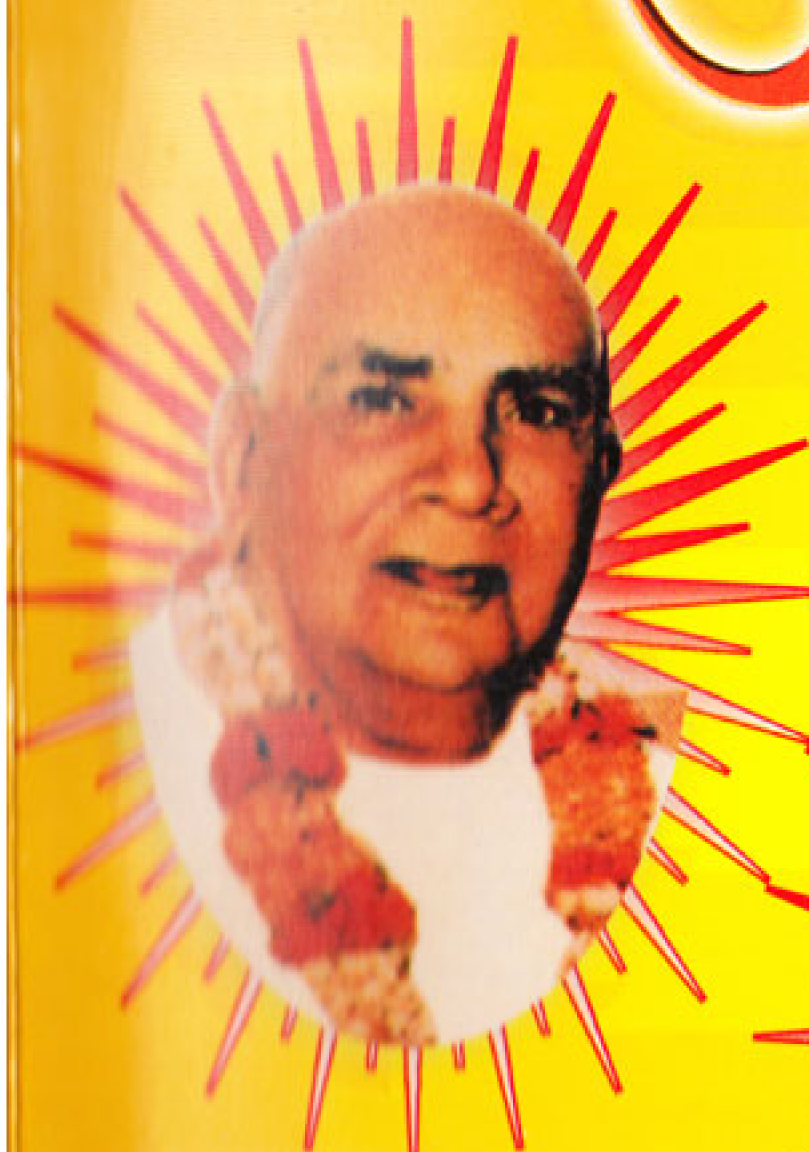

रुहानी विचार

DIVINE THOUGHTS

PREFACE

Divine Thoughts

My Dear Ownself

The book attempts to bring together invaluable life experiences of Dada Bhagwanji & Geeta Bhagwan ji. It is because of their vision & blessings that masses today are engrossed in deep devotion. This book is an effort to encourage and strengthen the belief and hence life meaningful/ purposeful. Our motto will be complete only if everyone gets close to Guru, to their self with the help of this book.

Thanks

Om

दो शब्द

"रुहानी विचार"

मेरे निज आत्म्

रुहानी विचार दादा भगवान जी व गीता भगवान जी की गहन तपस्या का परिणाम है। जिस प्रकार समुद्र मंथन के द्वारा अनेक रत्नों की, अमृत, लक्ष्मी आदि की प्राप्ति हुई थी उसी प्रकार यह पुस्तक युग पुरुष दादा भगवान व गीता भगवान के अमूल्य अनुभवों के पुष्पों (विचार) का संग्रह है। यह दादा जी की ही कृपा है जो आज जन-जन हर पल भक्ति में तल्लीन है, वो आज भी हर क्षण हमें वाणी द्वारा दृश्य और अदृश्य रूप से प्रेरित कर रहे हैं। हमारा विश्वास है कि यह पुस्तक उसी प्रयास को दृढ़ करने में लाभप्रद सिद्ध होगी।

आपका अपना स्वरूप

ओम्

विषय सूची

1. दादा भगवान के पत्र 1

2. गीता भगवान के पत्र 23

3. दादा भगवान के पत्र (अंग्रेजी से हिन्दी) 44

4. भगवान स्वामी श्री रमण महर्षि के वचन......... 90

5. अनमोल वचन 99

दादा भगवान के पत्र

पत्र संख्या (1)

दिव्य मोतियों की माला

दिनांक 7/1/64

मन ऐसा वैसा दुश्मन नहीं है जो नम्रता या मनाने से हाथ आ सके। यह है शेर से भी अधिक शक्तिशाली। स्वामी हेमराज ने कहा है। –

दुनिया में दुख-सुख है ही नहीं, पर अज्ञान के कारण मनुष्य अपने को शरीर समझता है और दुख में दुखी और सुख में अपने को खुश समझ रहा है। दुनिया के भोग पदार्थ हैरानी और परेशानी की खान हैं। ऊपर से मीठे पर अंदर से जहर से भरपूर हैं।

जो गंभीर हैं वो ही मर्द हैं, बाकी हांका (बकवास) तो बच्चे भी करते हैं।

"क्रोध विख खां वधीक कातिल" अथवा बाकी सब काम फिर बन सकता है पर टूटा दिल फिर बन नहीं सकता इसलिए "वाजिब आहे त बिए जे आज़ारत खां परहेज कर।" विचार करो कि कौन सी चीज के लिए क्रोध का रहे हो? जानना चाहिए कि मेरी सारी दौलत दूसरों के हवाले हो जाएगी और वो जैसा चाहेंगे, वैसा करेंगे। फिर मेरा क्रोध कहां जायेगा और किस पर होगा?

फिर जीवन के चार दिन क्यूँ जहर कर दें? क्या मजा रखा है दूसरों के ऐबों और कमियों को देखने में और गुनाहों के भागीदार बनने में? सब में गोविन्द रूप देखकर (जानकर), किसी के भी कर्मों के लिए शिकायत (दाह) नहीं करें। और न तो

सबको अपने समान समझ कर दिल से दूर कर दें? अपने काम से मतलब रखें। दूसरों से क्या वास्ता। जो जैसा बोएगा, वैसा काटेगा। जीवन जा रही है, ऐसा जानकर अपने को विषयों के, भोगों के जंजाल में मत अटकाओं।

संसार में कोई भी चीज स्थिर नहीं है। हर एक चीज अपने समय पर समाप्त होगी। सिर्फ ख्याल की शक्ति है।

हम हर चीज को अपना समझ कर कायम दायम समझकर बैठे हैं। पर अगर यह ख्याल शान्त हो जाये (कि यह सब मेरा है) तो न कोई झगड़ा न कोई झंझट।

अजीब पहेली

शरीर से पहले क्या अवस्था थी और बाद में क्या होने वाला है, यह पहेली आज तक कोई सुलझा नहीं पाया है और न सुलझा पाएगा।

जहान नाम है उस शरीर की मौजूदगी का। शरीर के नाश होने के बाद क्या है?

जैसे सूर्य निकलने से संसार के सारे कार्य शुरु होते हैं और उसके ही आधार पर होते रहते हैं। पर सूर्य सबसे ऊपर आकाश में स्थित है, वैसे ही शरीर के भी सारे कार्य आत्मा के प्रकाश से होते रहते हैं। और आत्मा सूर्य की तरह शरीर व कर्म से न्यारी है। शरीर को कोई शक्ति नहीं है कि वो ज़रा सा भी हिल सके। आत्मा की शक्ति के बिना शरीर कुछ नहीं कर सकता।

पाँच तत्त्व

शरीर आकाश, पवन, आग, पानी और धरती इन पाँच तत्त्वों

से ही बना है और मरने के बाद भी इन पाँच तत्त्वों में ही शरीर समा जाता है। यह पाँच तत्त्व आत्मा से प्रकट हुए हैं। शरीर आत्मा की चेतनता पाकर ही चेतन हुआ।

मर्दानगी तो तब है जब जवानी में ही दुनिया के भोग पदार्थों से मुँह मोड़ लें और परमात्मा की तरफ रुख कर लें। दुनिया में जो भी तकलीफ है वो अज्ञान के कारण है।

मन को ऐसा वैसा दुश्मन मत समझना। शेर जैसा जबरदस्त है। इसलिए उसको बिल्कुल काबू में रखो। जब मन छलाँग मारे उस वक्त विचार के लगाम से परमात्मा के चिन्तन में मशगूल हो जाओ।

पत्र संख्या (2)

जब जीव रूपी पक्षी इस शरीर से उड़ जाता है तब इस शरीर की क्या हालत होती है। अगर शरीर कुछ होता तो हिलता-डुलता, पर कुछ भी नहीं। शरीर है (आखेड़ो) घोंसले के समान और आत्मा है उस शुद्ध पक्षी के समान। पर अज्ञान के कारण पक्षी अपने को (अखेड़ो) घोंसला समझकर बैठा है और अपना शुद्ध स्वरूप भूल गया है। इसलिए दुख-सुख, जन्म-मरण भास रहा है। शरीर रथ के समान है। इन्द्रियाँ उसमें बंधे घोड़े जो आसक्तियों रूपी रस्सियों से बंधे पड़े हैं।

"मन ही रथ हलाइण वारो आहे ऐ, आत्मा उन ते सवार आहे" (मन ही रथ चलाने वाला है, आत्मा उस पर सवार है)। जैसे सवार को सवारी से कोई सम्बन्ध नहीं है, वैसे ही आत्मा का शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं है। जब तक शरीर से कुछ कर्म होता रहता है तब तक उसको जीवित समझते हैं और जब उससे कर्म नहीं हो पाता है तब उसको मरा हुआ जानकर आग में जला आते हैं। यह साबित करता है कि कर्म शरीर का स्वरूप है। तो फिर अगर शरीर कर्म करता है तो इसमें आश्चर्य कैसा?

जो इस शरीर के कर्मों और अवस्थाओं को जान रहा है वो है आत्मा, जो न तो जन्मता है न मरता है।

संसार का बीज अज्ञान है। अज्ञान के कारण ही ये सारा संसार भास रहा है (पसारो पसजी रहियो आहे) और अज्ञान के निवृत्त होने से सब गायब हो जाता है।

यह साबित करता है कि न कोई शरीर है और न कोई कर्म है पर सब कुछ भ्रम है। बस एक आत्मा अपने में स्थित है।

आत्मा को जन्म, मरण, पाप, पुण्य सब इसलिए लग रहा है कि वो अपने को शरीर से सम्बन्धित समझ रही है और कर्म करने की इच्छा रखता है। पर जब यह ज्ञान हो जाता है कि मैं वो निराकार सब का साक्षी हूँ और शरीर का मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं है, उस वक्त मुक्त हो जाता है।

जब तक शरीर और जगत को सत्य मानते हैं, तब तक इधर-उधर की ठोकरें खाते रहते हैं। ज्ञानवान को न तो शरीर भास रहा है और न शरीर का कर्म भास रहा है। यह सारी बढ़ाई अभ्यास की है जो हमें इस पद पर पहुंचाता है। अभ्यास के बिना मनुष्य अंधे कुएं में पड़ा है और इन्द्रियाँ अपने-अपने कर्म में लगी हुई हैं।

प्र0 मौत क्या है? और मरने के बाद आत्मा कहाँ जाती है?

शरीर रूपी मिट्टी के पुतले से प्राणों का सम्बन्ध तोड़ना और इन्द्रियों और अंगों का एक जगह शाँत हो जाना, उसको मौत कहते हैं। जीवन नाम है इन्द्रियों और अंगों के चुर पुर का। मृत्यु नाम है उनके शाँत हो जाने का।

जो जिन बातें में मशगूल होंगे वो उसका ही रूप हो जाएंगे। इसलिए जिज्ञासु को तो दूसरे सारे काम छोड़ कर हर वक्त अपने को ईश्वर का नाम सिमरण में मशगूल करे तो फिर अंत समय ईश्वर में ही समा जाएगा।

पत्र संख्या (3)

कुदरत की हर चीज बोल रही है और उपदेश दे रही है। हर चीज जो दिख रही है और स्थूल है, वो पाँच अंगों की वजह से साबित और स्थित है। उन पाँच अंगों के बगैर कोई भी वस्तु प्रसिद्ध नहीं हो सकती।

तात्पर्य : वो पाँच अंग है :-

1. नाम माने नाम
2. रूप माने सूरत
3. अस्ति माने होना
4. भांति माने भासना (निश्चय)
5. प्रिय माने खुशी देने वाला

उदाहरण : टेबल (मेज) : नाम है मेज, चार कोनों वाली या गोल वो हुआ उसका रूप। अस्ति माने है, कहीं स्थित है, रखी है? दिख रही है। निश्चय हुआ कि दिख रही है माने भांति और उस निश्चय के बाद जो उस से रस मिल रहा है वो है प्रिय।

सारी वस्तुएँ इन पाँच अंगों के कारण ही तो सिद्ध होती है। पर नाम व रूप हर एक वस्तु का अलग-अलग है। बाकि अस्ति, भांति, प्रिय सब में समान है। अगर नाम व रूप हटा दें तो बाकि अस्ति, भांति, प्रिय सब में वो ही है और पूर्ण है और वो ही रह जाता है। जो चीज अलग-अलग नाशवंत है वो मिथ्या जाननी चाहिए। इस लिए नाम रूप मिथ्या है। इनको मिथ्या जानकर अपने दिल से भुला देना चाहिए, बाकी अस्ति भांति प्रिय का निश्चय पक्का करना चाहिए। यानि हर एक वस्तु सत् (अस्ति) चित

(भांति) आनंद (प्रिय) है और कुछ भी दूसरा नहीं है।

द्वैत सिर्फ नाम रूप के कारण ही होता है। अगर सोच समझकर देखोगे तो संसार सिर्फ नाम-रूप ही है। और नाम-रूप मिथ्या है और मिथ्या वस्तु सदैव नाशवंत है। इसलिए उससे प्यार करना मूर्खता है। ऐसा समझने से कुछ भी दुख और दिक्कत नहीं होगी।

शांति, धैर्य, हंसमुख स्वभाव, समदृष्टि, बेपरवाही आदि देवताओं के लक्षण हैं। उनको अमल में लाने से परमात्मा के ज्ञान का अभ्यास पक्का होता है। सम्बन्ध के दर्द से छूटने का यही रास्ता है। संसार के धंधों में प्रवृत्त होने में क्लेश और झगड़ों के सिवाय और क्या हाथ आता है। तो क्यूं न इन ख्यालों को निकाल कर मन को एकाग्र कर अपने निज स्वरूप में मशगूल रहें।

मुक्त वो है जिसको किसी भी पदार्थ के लिये कशिश और इच्छा नहीं है और सदैव शान्त चित है। अंदर का आनंद एक अजीब नेमत है और उसकी प्राप्ति दो बातों पर निर्भर करती है -

1. संतों का संग
2. तीक्ष्ण बुद्धि

संतों का वचन ही संतों का संग है और उस पर विश्वास रख कर अपने जीवन में ही लगाना है तीक्ष्ण बुद्धि। विषय रस की इच्छा तो परमात्मा के ज्ञान न होने के कारण होती है। मन ऐसी सूक्ष्म शक्ति है जिस पर थोड़ा भी भरोसा नहीं कर सकते हैं एक क्षण में देखो तो आकाश में उड़ कर मौज ले रहा है। दूसरे ही क्षण में देखो तो पाताल के तल में गोते लगा है।

मन है कोयले के समान। जैसे कोयला कभी भी उज्ज्वल नहीं होता है न साबुन से, न किसी दूसरे इलाज से।

"भरिए मन पापा के संग
वो धोये नामा के रंग"

सिर्फ आग में पड़ने से अपनी कालिख निकाल कर लाल चोला पहनता है। उसी तरह मन भी अपनी आदत किसी भी हालत में और किसी भी उपाय से नहीं छोड़ेगा। सिर्फ आत्मज्ञान द्वारा ही उसकी चंचलता निवृत्त होती है। तो फिर आवश्यक है कि हर वक्त अपने चेतन आत्म स्वरूप में स्थित रहो। अभी जरा सा भी फुरना उठे सही तो उसी वक्त ही रोक दो। उसको इतना समय भी मत दो कि मन का इन्द्रियों से मिलाप हो पाए और जीवभाव, आत्मभाव के ऊपर हावी होकर अपनी इच्छा अनुसार कर्म कर बैठे।

जितना हो सके अपनी वृत्ति और ख्याल को एकाग्र रखो। और वो तभी हो सकेगी जब मनुष्य अपने को पूर्ण, शरीर के संबंध से बिल्कुल परे और नाम रूप से न्यारा समझेगा।

पत्र संख्या (4)

आत्मा सदैव अपने स्वरूप सत् चित आनंद में स्थित है। कोई भी वस्तु आत्मा को अपनी आदि अवस्था से हटा नहीं सकती। मगर माया के कारण अनेकता की इच्छा के कारण, सत् चित आनंद स्वरूप में भेद पड़ने लगता है। माया कोई वस्तु नहीं है। आत्मा को छिपा देने की माया में सामर्थ्य नहीं है। बल्कि माया भी आत्मा के सहारे ही है और आत्मा को ढ़क (आच्छादित) देती है।

जैसे पानी से काई उत्पन्न होती है और पानी को छुपा देती है। जैसे अंधेरा घर की दीवारों से ही पैदा होता है पर घर को ही अंधेरे में छुपा देता है। सूरज से बादल होते हैं और सूरज को ही ढक देते हैं। वैसे ही माया भी आत्मा से ही उत्पन्न होकर आत्मा को छिपा देती है।

माया, अविद्या, अज्ञान एक ही वस्तु का नाम है। अज्ञान अंत:करण में है। अंत:करण–मन, चित, बुद्धि, अहंकार को कहते हैं। जब तक अंत:करण अज्ञान से भरा है, तब तक उसमें ज्ञान का साफ (ओलड़ा) प्रकाश पड़ नहीं सकता।

जगत क्या है? सिर्फ एक कल्पना, पर्दा और कुछ नहीं। इसलिए जब यह कल्पना का पर्दा खुलता है, तो अंत:करण का भ्रम भी दूर हो जाता है, तभी आनंद की प्राप्ति होती है।

1) तत्वज्ञान–कहते हैं विवेक (यानि सत् और असत् के विचार के द्वारा अपने स्वरूप को अच्छी तरह पहचानना।

2) मनोनास–कहते हैं मन को इन्द्रियों के भोगों के रसों से दूर रखना। शरीर नाशवंत है और उसके सदैव शक्तिशाली रहने और ठीक रहने की आशा रखना मूर्खता है। शरीर इतना अपवित्र है जिसको पवित्र करना बस के बाहर है। इसकी बनावट है हड्डी,

मांस, चमड़े, रोग, रक्त, मल, मूत्र से। ऐसे शरीर को सिंगारना भी महामूर्खता है। इसलिए यही उचित है कि इस ख्याल को आत्मा की तरफ मोड़ कर सदैव एक रस होकर रहें। वक्त को अज्ञानियों के बीच में न व्यतीत करें। स्वभाव बड़ी अजीब चीज है। जब एक बार वो दिल में आसन जमा लेता है, तब उसको बाहर करना बड़ा कठिन होता है।

आराम भी इन स्वभावों के वसीले मिलता है। पर अगर विचार करके देखों तो ये बंधा है ही स्वभाव के कारण। और अगर बंधन वाले स्वभावों का त्याग कर दे तो खुद निज स्वरूप हो जाए।

एक क्षण भी परमात्मा से विमुख होना है सांपों के मुँह में फंसना। और सर्वदा परमात्मा के सिमरण में रहना है जैसे कष्टों से बचे रहना।

खुशी नाम है ख्यालों की एकाग्रता का और दुख-क्लेश ख्यालों की परेशानी का नतीजा है। इसलिए जितना हो सके उतना इस पवन रूप मन को विचार की लगाम डालकर वश में करना चाहिए और वो विचार यह है कि सदैव मन का साक्षी रहना चाहिए। सर्वदा मन के कार्यों (विचारों) का साक्षी और दृष्टा होकर रहोगे तो यही मन जो खून चूसने वाला और शत्रु है, वो अपने आप ही सच्चा साथी बन जाता है। तुम्हारे स्वभाव ही तुम्हारा स्वरूप है इसलिए किसी भी तरह अपने स्वरूप का सिमरन कर वृत्ति को ब्रह्मकार करना है जिसका नाम "<u>समाधि।</u>"

संसार कोई दूसरी चीज नहीं है सिर्फ वृत्ति का हंगामा है। वृत्ति का बाहर आना संसार का रूप है और अंदर जाना संसार का

गुम होना है।

वृत्ति की तीन अवस्थाएँ हैं-

1. जब आँखों में आती है तो जाग्रत है।
2. जब कंठ में आती है तो निद्रा में है।
3. जब परमात्मा में है तो सुशोपति अवस्था में है।

इसलिए आवश्यक है कि वृत्ति को अन्तर्मुख करो। यानि शरीर से खीच कर आत्मा में लगाए। दूसरा इस उपाय से मन एकाग्र होता है। यानि जहाँ-जहाँ मन की वृत्ति जाए वहाँ-वहाँ ब्रह्म ही ब्रह्म का निश्चय करो।

जिज्ञासु को चाहिए कि इस मार्ग में मजबूती से पांव रखे बार-बार अपने स्वरूप का विचार और सत् शास्त्रों का सिमरन करना और मन को एकाग्र करने में लगा रहे। सुस्ती हरगिज न करे और प्रसाद को आखों के आगे रखे।

शरीर का मोह त्यागना ही परम आनंद को पाना है। उसके त्यागों के बगैर किसी ने भी परम पद को प्राप्त नहीं किया है।

राहत है के मोह रूपी कैदखाने को तोड़ने में संसार के दुख की दवा है ज्ञान। दुख से छुटकारा तभी होगा जब संसार का त्याग होगा।

जब तक शरीर है तब तक उसकी परवरिश अन्न, जल से करनी पड़ती है।

कितनी अजीब बात है कि हमारे आत्म स्वरूप के मंदिर में हाजिर है (परमात्मा) और हम बाहर थपेड़े लगा रहे हैं।

शरीर का (वेसाह) निश्चय ही बंधन और बिछड़ना है। यानि देह को सच मानना ही बंधन और बिछड़ना है।

पत्र संख्या (5)

प्र0 दु:ख और सुख क्या है? और इसका कारण क्या है?

उ0 मन के द्वारा हरेक को दु:ख सुख का अनुभव होता है। मन के मुर्दे होने पर या चाल, सत्ता बंद होने पर मन को दु:ख और न सुख महसूस होता है। जब मन नींद में है तो उसको दु:ख-सुख की कोई जानकारी नही है।

दु:ख सुख मन की जागृति अवस्था में ही महसूस होते है। बिना उसके न दु:ख है न सुख। अब यह जानना है कि मन की कौन सी अवस्था में दु:ख सुख महसूस होगा।

जब मन स्थिर नही होगा तो दु:ख महसूस होगा पर जब मन एकाग्र है तो सुख महसूस होगा। मन जब स्थिर तो सुख महसूस होगा और चंचल अवस्था होगी तो दु:ख महसूस होगा।

तन में जब किसी तरह की कामना पैदा होती है तो मन वृत्ति उसी कामना से भर कर उसी चींज या पदार्थ की प्राप्ति के लिए दौड़-धूप करता है और जितनी ज्यादा दौड-धूप उसकी प्राप्ति के लिये करनी पड़ती है, उतनी ही ज्यादा बेआरामी और आशांति होती है।

उसी तरह जैसे ही उस कामना वाले पदार्थ की प्राप्ति होती है, वैसे ही कामना खुद उड़ जाती है और मन की वृत्ति की दौड़-धूप भी बंद हो जाती है। और पहले वाली अवस्था जो कामना से पहले शांत और (निरोक्षश्यप) अवस्था फिर प्राप्त हो जाती है। जब नदी का पानी मैला होता है (फिर नीचे भले ही साफ हो, सिर्फ कचरा ऊपर से ही

हो उसको ढके हुए) तो भी उसमें किसी की भी चीज की परछाई नहीं पड़ेगी। और अगर इसी तरह जल चाहे साफ भी हो, पर अगर हवा के कारण उसमें लहरें हैं तब भी उसमें किसी भी पदार्थ की परछाई ठीक से नहीं पड़ेगी। सिर्फ शुद्ध, साफ और शांत जल में ही परछाई ठीक ठाक से पड़ती है। तब उसमें ऐसा ही दिखाई पड़ता है जैसा खुद है।

इसी तरह शुद्ध साफ और शांत मन में अपनी आत्मा की परछाई ठीक से पड़ती है, और अशुद्ध, अशांत मन में यह परछाई नहीं पड़ती है।

आत्मा सबका सच्चिदानंद स्वरूप है यानि सत् स्वरूप, चित स्वरूप और आनंद स्वरूप इसलिए उनकी परछाई भी ऐसे ही नजर आती है। इस तरह शुद्ध और शांत मन में जब आनंद रूप आत्मा की परछाई अपने आनंद रूप के झलक के कारण चमकती या झलकती है तब इस मन को सुख महसूस होता है। और जब मन मलीन होने के कारण अपने आत्मा की परछाई ठीक से नहीं पड़ती है, तब मन को दुख महसूस होता है। इसलिए तन ही अपने दुख, सुख का कारण बनता है।

आम तौर से लोग सुख दुख का कारण कभी मन को, तो कभी कामना या तृष्णा को मानते है। लेकिन हकीकत में मन और उसमें कामना या तृष्णा का होना, सुख दुख के कारण कहे जा सकते हैं; पर मूल कारण कभी भी नहीं। क्योंकि आनंद की खान सच्चिदानंद स्वरूप आत्मा ही है, और इस आत्मा का ज्ञान ही नित्य आनंद में मग्न कराने वाला है। इस प्रकार से शोक और, दुख का मूल कारण भी आत्मा का अज्ञान है या अपने आप को भूल

जाना है, और अज्ञान की शाखा रूप मोह, तृष्णा, कामना और इन्द्रियों की निर्बलता है। सुख या आनंद का कारण आत्मा का ज्ञान, या अपने निज स्वरूप की जानकारी है। चित्र की अशांति का नाम दुख है और शान्ति का नाम सुख हैं।

दुख का मूल कारण पहले अज्ञान और फिर उसके कारण उत्पन्न तृष्णा प्रतीत होती है। तृष्णा को पूरी करने से तृष्णा शान्त नहीं होती है, पर पहले से भी ज्यादा प्रबल बना देती है। दुखों का मूल कारण है अज्ञान और अज्ञान सदैव ज्ञान से निवृत्त होगा जैसे अंधकार प्रकाश से दूर होता है।

पत्र संख्या (6)

दादाजी की बाम्बे से आग्रा आई चिठ्ठी में से...

दिनांक: 18/3/63

मन दुश्मन हर रोज कमजोरी के ख्याल दिलाकर आत्मा को भुलवाकर जूते पड़वाता है। जब अपनी (राजाई) बादशाहत छिनती नज़र आती है, तो जोर-शोर से लड़ाई करने आता है। अनेक रूप हैं मन को ठगने के, सिर्फ दुश्मन को पहचानना है। मन आता ही तब है जब आत्मा को भूलते हैं या गाफिल हैं। पर अगर मालिक चौकन्ना हो तो चोर कभी भी नहीं आयेगा। मन मर नहीं जायेगा। जब तक प्राण है शरीर है, तब तक मन भी रहेगा। पर ज्ञानी अपने को ख्याल से अलग समझता है, सिर्फ रमज़ का फ़ेर (रोलो)। न किसी ने किसी को बेचा है और न ही किसी ने किसी को खरीदा है, पर सब की हालत गुलामों से भी बद्तर है। अपनी इच्छाएँ ही मनुष्य को गुलाम और कमजोर बनाती हैं। अब भला ज्ञान सुनने के बाद कौन सी इच्छा कर सकते हैं। मुक्ति की एक इच्छा भी रुकावट है मुक्ति में। गुरु ने बताया कि तुम मुक्त हो। मुक्ति का अभिमानी मुक्त और बन्ध का अभिमानी बन्धन में हैं। गुरु वाक्यम् सत्यम् करके लो और निश्चय करों कि मैं सत् चित आनंद रूप, मुक्त परमात्मा हूँ। पर फिर-फिर अपने को और दूसरों को शरीर समझ द्वैत में दुखी होते हैं।

आज किसी ने सत्संग में पूछा कि आपका पहला पाठ क्या है? तो जवाब दिया कि "मैं ना" और भजन की लाईन (पंक्ति) सुनाई -

"बसकर-बसकर आहे ही अल्लाह, आदम..."

यानि बसकर बसकर है ही अल्लाह, आदम होकर यहाँ आया है। कहने में यह लाईन सरल है पर सारा ज्ञान उसमें समाया हुआ है। अपनी 'मैं, मैं' ही जाला बन बैठी है ("जारो विझी बेठी आहे')। गुरु तो रोज कहता है कि अपने को गवाओ तो वो मिले। एक बार जिसने अपना शरीर परमात्मा को अर्पण करा है तो फिर शरीर के बारे में कुछ नहीं सोचना है और कमजोरी समझना पाप है क्योंकि अब तो परमात्मा की ही गरज है (गति)। नाम रूप नाश है और ब्रह्म सच हे। इसलिए आत्मा को बैठकर पक्का करो। बेकार की बातें बंद करो। जब आत्मा निश्चय हो गया तो भगवान खुद ही आकर तुमसे बुलवाएगा।

अमरीका में विवेकानंद जब लेक्चर करने के लिए उठा तो सोचने लगा मैं कैसे बोलूंगा? अंदर से आवाज आई, तुम हो ही नहीं। और फिर जब बोले तो हाल तालियों से गूंज उठा। यह सब अपने को भुलाने का फलस्वरूप हुआ। मैं अकर्त्ता हूँ, यह कभी नहीं भुलाना।

आत्मा के लक्षण–निर्भय, निर-वैर, अकाल, अमूर्त, अजुनी, अकर्त्ता, अभोक्ता, साक्षी-स्वरूप। सर्व में सर्व से न्यारा, वो है 'मैं'।

अपनी रची हुई जीव सृष्टि को भुलाना है। सब मुकर जाओ - दिवाला निकाल दो - कर्जदार सारे चले जाएंगे। मानने में ही बंधन है। **सच्ची आजादी है मन और इन्द्रियों को वश में रखना।** मनुष्य जब पहाड़ों या दूर पैदल जाते हैं तो फर्स्ट एड का बाक्स अपने साथ ले जाते हैं। जिसमें रुई, टिंचर, आईयोडिन, बैण्डेज, इत्यादि होता है, ताकि कभी भी किसी को चोट लगे तो तुरन्त इलाज हो सके। उसी तरह मन के लिए भी हर समय फर्स्ट एड का सामान तैयार रखो। एक पेज पर ये कुछ बातें लिखकर

रखो और रोज सवेरे उठकर ये बातें पढ़ो और पक्की करो -

1. तुम सिर्फ आज का दिन दुनिया में हो और आज का दिन तुम्हारा आखिरी दिन है । इसलिए मन आज तुम कुछ भी मत सोचना। सब बना पड़ा है। तुम्हारे सोचने से कुछ भी चेंज नहीं होगा।
2. सिर्फ आज का दिन मौन रखूँगा। बिना आवश्यक काम के किसी से भी एक अक्षर भी नहीं बोलूंगा।
3. आज का सारा दिन अपने मन पर सावधानी रखूंगा। मुझे अपना उद्धार करना है। अकेला ही इस दुनिया में आया हूँ और अकेला ही जाना है। फिर ये संबंध काहे के? आखिर तो सबको छोड़ना है, तो क्यूँ न अभी ही खुशी से त्याग करूँ।
4. या परमात्मा देखना, या परमात्मा की चर्चा करना इन दोनों के अलावा परमात्मा खाली ही न रखे।

इसी तरह शास्त्रों और पुस्तकों को छोड़ अपनी लिखी बातों को बैठ कर पढ़ो और पक्का करो। अपना ही गुरु बन कर अपने को सुधारो और अपने को बनाओ।

जब तक बाहर गुरु मानते हो नर्क अंदर भटक रहे हो। अपने में क्यूँ नहीं स्थित होते हो? स्थित रखो तुम अपना स्वधर्म

सर्व धर्म में श्रेष्ठ धर्म
हर को नाम जप-निर्मल कर्म।

पत्र संख्या (7)

देह वासना, शास्त्र वासना और लोकवासना - ये तीन रुकावटें मुक्ति के मार्ग में।

निष्काम कर्म से मन अमन हो जाता है। फिर भी 'मैं ब्रह्म हूँ' यह निश्चय करने के सिवाय मुक्त नहीं हो सकते।

जब भ्रम सत्गुरु के वचनों से दूर हो जाता है, तब ब्रह्म समझ में आयेगा। गुरु के वचनों का विचार सदैव करते रहो। गुरु ये वचन शास्त्रों से तत्व (मक्खन) निकालकर तुमको सुनाता है। और अपना अनुभव भी यानि विज्ञान भी तुमको समझाता है। वैराग्य से सब पदार्थ मिथ्या, फानी समझ में आ जाते हैं। 'क्या माँगू कुछ थिर नाहि।' सत्गुरु के वचन श्रद्धा और विश्वास से विचारने चाहिए-यानि मनन और निध्यासन करना चाहिए। वैराग्य और मुक्ति के लिए तेज रफ्तार रखो।

भगवान पाने के लिए न कोई साधन है, न कोई रास्ता है। बस गुरु के वचन विचार करके अपने को परमात्मा समझना है। Be Still 'सो प्रभु दूर नहीं सो तू है।- जो अंदर है उसको बाहर कैसे देखेंगे?

हिरण की तरह नाभि में कस्तुरी की खुशबू के लिए बाहर भटकना बेकार है।

सब शास्त्र बताते हैं कि अपनी आत्मा का चिन्तन करना ही भक्ति है। वो जिज्ञासू, स्थित प्रज्ञ, गुरु से उपदेश सुन, संसार के बंधनों से मुक्त होता है। मुक्ति की राह दिखाने वाला सत्गुरु है जो दरियादिल होता है। बिना माँगे ही मदद करता है। जैसे चंद्रमा खुद ही सूर्य से जलती किरणों से तपती धरती को शान्त करता है, ठण्डा करता है।

निर्वाण माने शरीर के भाव से रहित यानि जहाँ सारी हस्ती ही समाप्त हो गई हो। शरीर-स्त्री-बेटे आदि से मोह निकालो। शरीर का मोह माने 'मैं शरीर हूँ' मेरी स्त्री या बेटे हैं। यह है अज्ञान। जब तक ज्ञान की जानकारी नहीं होती, तब तक शास्त्रों का अभ्यास बेकार है और तब तक परम तत्व को जान लिया तो फिर शास्त्रों का अभ्यास भी निष्फल है। शुरु में विचार और वैराग्य के सिवाय पुस्तकों को पढ़ना बेकार है क्योंकि शास्त्र आत्मा का अनुभव नहीं करवा सकते हैं। और जब सत्गुरु के द्वारा आत्मा का अनुभव हो जाता है, तो फिर शास्त्रों को कोई फायदा नहीं क्योंकि आत्म अनुभवी, वो तो अपने आत्मा में मगन रहता है और अब उसको किताबों की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

अज्ञान तो ज्ञान से ही जाता है। बाकी वेद-शास्त्र, मन्तर-जन्तर, किसी भी काम के नहीं। मनष्य जितना भी विद्वान हो, शास्त्रों का ज्ञान हो, पर वो किताबी ज्ञान उसको मुक्त नहीं कर सकते।

ज्ञानी गुरु से सुन कर सर्व पदार्थ संसार के मिथ्या जानकर वैराग्य से उनकी इच्छा बिल्कुल त्याग देता है। फिर भी प्रारब्ध से उसके शरीर से जो भी हो रहा है उसको अज्ञानी कर्त्ता समझता है।

मन के सिवाय ज्ञान और कुछ भी नहीं है। मन ही जन्म-मरण का कारण रूप अविद्या है। 'मन नाश तो सब नाश' (कर्म) मन के जागृत होने से ही सब कुछ प्रतीत होने लगता है। जब आत्म प्रकाश होता है, जिसको सिद्ध अवस्था कहते हैं तो मन तब रहता ही नहीं है।

वास्तव में तो मन है ही नहीं। बोद्धवान मनुष्य को इस संसार में कोई भी वस्तु ग्रहण करने योग्य या त्यागने लायक न होने के कारण कोई भी कृत्वय नहीं यानि कुछ भी करता नहीं है। क्योंकि

जो कुछ दिखने में आ रहा है वो सब आत्मा स्वरूप है। इसलिए तुम देह अध्यास को छोड़ो।

माँ-बाप के वीर्य रूपी कचड़े से पैदा हुए और उस वक्त भी गंद अर्थात विष्टा, मूत्र, मांस से भरे हुए देह को चाण्डाल के समान अपवित्र मानकर उसको दूर से ही त्याग दो। ब्रह्मभाव में स्थित होकर कृतार्थ हो जाओ।

निष्काम कर्म माने किसी भी इच्छा के रहित हो। वो किसी भी बंधन में नहीं डालता। निष्काम कर्म सिर्फ चित्त की शुद्धि के लिए है, आत्म दर्शन के लिए नहीं। आत्म दर्शन सिर्फ विवेक और विचार से होता है।

'ज्ञान भया तो कर्म नाश', सर्व कर्मान परितज्य, सर्व धर्मां परितज्य' 'माम एकम शरणम्', 'मैं ही तो हूँ' ये जानकर बाहर के सब भोगों की चाहना त्यागनी चाहिए।

अज्ञान के कारण ही हमारा असली स्वरूप भूलता है और तब ही इच्छाएं जागृत होती हैं और कर्म होते हैं। यानि आवरण रूप अज्ञान के दूर होने पर असली आत्म स्वरूप का बोध होता है तो सारा दुख दूर हो जाता है।

बिल्कुल ज्ञानवान पण्डित-चतुर सयाना और शास्त्रों का बिल्कुल सूक्ष्म अर्थों को देखने वाला भी कई प्रकार से समझाने पर भी अहंकार से घिरा हुआ होने के कारण अच्छी तरह से नहीं समझ पाता। यह भयानक तमोगुण की बड़ी आवरण शक्ति बहुत ही बलवान है जो आत्मज्ञान के सिवाय नष्ट नहीं होती है। आवरण के कारण मनुष्य वस्तु की असलियत को नहीं जानता और उसको एक के बदले दूसरा समझ बैठता हे। या उसका होना संभव नहीं

समझता है। या उसके होने में शंका लाते है और यह विक्षेपता ही मनुष्य को दुख भोगवाती है। ब्रह्म नहीं इसको अभावना कहते हैं।

मैं शरीर हूँ, यह विपरीत भावना है। किसी के होने में संदेह वो असत्य भावना है या नहीं, ऐसी (शंका) शक को कहते हैं।

सतोगुण निर्मल पानी की तरह है-'शुद्ध', फिर भी रजो और तमोगुण के मिलने से वो भी जन्म-मरण रूप संसार बंधन का कारण बनता है। ऐसी नींद थी कि कोई भी खबर नहीं थी, यह सशोप्त अवस्था है।

जगत मिथ्या है जैसे रस्सी में सांप या सपने के पदार्थ प्रतीत होते हैं या जैसे मृगतृष्णा का जल नजर आता है।

जैसे सूर्य की किरणों से पैदा हुए बादल सूर्य को ही ढक देते हैं और खुद फैल जाते हैं, वैसे ही आत्मा से उत्पन्न हुआ अहंकार आत्मा को ढक कर खुद स्थित हो जाता है। फिर अहंकार के दूर होने पर आत्मा रूपी सूर्य प्रकाश करता हुआ दिखाई पड़ता है। इस देह को आत्मा मानकर सारा संसार चौरासी में भटकता है।

जैसे एक बदचलन औरत अपने यार की बुद्धि बिगाड़ उसको पागल बनाती है, वैसे विद्वानों को आत्मा की लापरवाही ही दुखी करती है। वो आत्मा को नहीं जानते। 'प्रभु ते भूलियां ते व्यापन सबेई रोग-, 'घड़ी इक विसरू राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय', 'सम दियु जग खे, आत्मा जग खे'।

जैसे सीढ़ी पर गिरती हुई गेंद, नीचे गिरती जाती है, लुढ़कती ही जाती है, वैसे ही बहिर मुखता होने से रोग लग जाते हें। निर्मल शुद्ध जल तालाब में पहले से ही था, सिर्फ ऊपर से काई का तह चढ़ा हुआ था। वो हटाया तो जल नजर आने लगा।

वैसे ही आत्मा पहले से ही सत्‌चित आनंद स्वरूप है। तुम्हारे अज्ञान का पर्दा चढ़ता है। तो दूर होने से आत्मा का साक्षात्कार होता है।

जैसे कि आसमान में कोई भी नीलापन नहीं है, कोई भी रंग नहीं है, पर हमारी भ्रांति से ही हम उसे ऐसे देख रहे हैं। वेसे ही आत्मा का भी किसी भी वस्तु से कोई लगाव नहीं है न ही उसका कोई रूप रंग है, और अकर्त्ता है। मगर हम भ्रम के कारण ही उसमें यह कर्त्ता आदि धर्म सब देखते हैं। अगर यह संसार सत्य होता तो सशोप्ति अवस्था में भी यह प्रतीत होना चाहिए था। मगर उसकी उस समय कोई भी प्रतीती नहीं होती है। इसलिए संसार सपने के समान असत् और मिथ्या है। इसलिए परमात्मा से जगत जुदा है।

गीता भगवान के पत्र

पत्र संख्या (1)

दिनांक: जून 1964

सत्‌चित् आनंद स्वरूप प्रिय मीरा, तुलसी, राधा और मेरे सर्व प्रिय स्वरूप सदैव अपनी सच्ची स्वरूप में स्थित रहो।

प्रेम पत्र मीरा तुम्हारा मिला। ज्ञान सुनते-सुनते कभी मन बेपरवाह हो जाता है। मेरा फर्ज क्या है गुरु की तरफ, यह भी भूल जाता है। और बल्कि यह कहते हैं कि गुरु को ऐसे करना चाहिए था, ऐसे नहीं करना चाहिए था। भगवान को छोड़कर नहीं जाना चाहिए, यहाँ आना चाहिए। यह तो भगवान पर आर्डर (हुकुम) चलाना हुआ। चलना है हमको भगवान के आर्डर (हुकुम) में और चलाते हैं भगवान को। और मजे की बात यह है कि उसकी हमें खबर नहीं पड़ती। मन कहेगा कि तुम सही हो। गुरु को भी उल्लंघन कर जाता है। मन को टालकर अपनी अक्लमंदी चलाएगा। ऐसा बीच की अवस्था में, सबके साथ होता है। पर यही वक्त है सावधानी का।

जिसके अंदर में सच्चा उमंग और गुरु के लिए प्रेम, ज्ञान का कद्र है, वो गुरु आज्ञा अनुसार चलने में समय या घड़ी नहीं देखता है। जितनी भगवान को तुम्हारी परवाह है, उतनी तुमको भगवान के लिए नहीं है।

तुम कहोगे नहीं आता है तो फिर हम भला कुछ कम हैं क्या? हमें क्या गर्ज है उसके पास जाने की? वो गुरु है तो हम भी कुछ हैं। मुझे भी ज्ञान है, आनंद है। जहाँ हूँ, मजे में हूँ। पर

यह मजा कैसा है? एक है आनंद जो किसी भी कीमत पर कम नहीं होता है। न कम होता है, न बढ़ता है, और दूसरा होता है सुख या मजा। जिज्ञासू मजे को आनंद समझकर बीच रास्ते में ही खड़ा हो जाता है। मजा आ रहा होता है बाहर से, समझ रहा होता है कि अंदर का आनंद है, कुछ इच्छा भी भगवान से दूर कर बैठी है।

सीता के साथ राम था पर सीता की इच्छा हुई सोने के हिरण की तो राम को भी हाथों से गवां बैठी और उल्टा रावण के हाथों में आ गई, और बेअंत दुखी हुई।

'रब रूसे त मत खसे' (गुरु के रूठने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है) सीता की इच्छा के कारण ही उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी। रब भी रूठ गया और रावण के पास भी जाना पड़ा। पुरुषार्थ के समय कहेंगे कि प्रारब्ध में होगा आना जाना तो आएंगे, पर जो प्रारब्ध पर छोड़कर पुरुषार्थ नहीं करता है, वो नीच पुरुष है।

जो साकार के होते उससे पूरा फायदा नहीं लेता है, उसको बाद में, अंत समय में पछताना पड़ेगा। किसी वक्त तो हरेक को पछताना पड़ेगा कि उस कमीनी दुनिया और लोकारीति के कारण मैंने अपना समय और भगवान भी हाथों से गवां दिया। कारीगर वाली दृष्टि डालो। Make the best of everything. मायूस न हो। कमजोरी मौत है। मन को अमन करो।

'मन अपने ते बुरा मिटाना, पेखे सगल सृष्टि साजन्ना' डाक्टर मौत से नहीं बचा सकता, पर गुरु बचाता है। 'ना वो मरे ना ठागे जाये, जिनके राम बसे मन माहे।' कोई कहता है जो सहज मिला वो दूध बराबर। हम कहते हैं 'डिणे दुख होया, अण डिणे राजी रहिया।'

मुस्कुराते रहो। सदैव प्रसन्न रहो। कोई कहता है कि 'ति बि ऐं कुबु भि अहिया तो रीदड़ अथेई लिखा।' हम कहते हैं भावी किति में किति पर परची रहु पिरीआ सां निर्भय होना तुम्हारा पहला फर्ज है। तब कह सकते हैं कि प्रारब्ध और परमात्मा में तुमको पक्का विश्वास हैं 'कतुबी ऐं कम्बूबी आगियां तोड़ीन्दड़ आहिन तिख्या' भगवान के राज में कभी भी गलत या नाहक (नुकसान) नहीं हो सकता। 'घड़ी इक विसरू राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय' तभी ही निर्भय और निर्वैर हो सकते हो। बाकी कर्त्ता पना तो कभी भी मुक्ति नहीं दे सकता।

'कोट कर्म बंधन के मोल

ज्ञान भया तो कर्म नाश'।

सबको अज्ञान है और वो जायेगा ज्ञान से न कि कर्मों से। दया धर्म का मूल तो है पर अभिमान से दया करना तो नर्क ले जाएगी। सब अच्छे कर्म, साकाम किये हुए, नर्क में ले जाएंगे। साकाम माने इच्छा और अहंकार से किये हुए। दुनिया भूली बैठी है कर्म काण्ड में। कृष्ण ने निष्काम कर्म दिखाया। गीता के दो योग हैं -

1) ज्ञान योग यानि मैं आत्मा हूँ।

2) निष्काम कर्म योग यानि सब कर्म इच्छा और अहंकार रहित, फिर बेड़ा पार है।

प्रारब्ध के अनुसार सब सहना है पर पाप में किसी का भी सहयोग मत करो। संचित कर्मों से कुछ थोड़े से कर्म परमात्मा ने प्रारब्ध करके इस जन्म में तुमको दिए हैं, उनपर तुमको चलना है। बाकी फिर नये कर्म इच्छा करके मत बढ़ाओ। बाकी सिर्फ परमात्मा को पाने के लिए पुरुषार्थ करो। सब कुछ अपने आप ही

हो रहा है। हाथों से कार्य हो रहा है, पर तुम अहंकार मत करो। ऐसे साखी और दृष्टा होकर देखो। जगत के सारे पदार्थ मिथ्या ही हैं। ये वैराग्य से समझने से आसक्ति निकल जाती है, न ग्रहण न त्याग हैं।

'जगत बनया ही नहीं, भले ही देखने में आ रहा है।' जैसे सपने के पदार्थ दिखने में आते हैं अपने में, पर जागने पर झूठे हो जाते हैं। ये मृग तृष्णा का जल है जो भास रहा है, पर उसकी हस्ती नहीं है। यह तुमको विश्वास करना है।

मन न बांधे धीर तो मन बेचे सत्गुरु के पास। अहमता ममता छोड़ो। समता में टिको। इच्छा मात्रम अविद्या। "क्या माँगू कुछ थिर नाही।" इच्छा और अहंकार दशमन है। अंदर में चिन्तन हो और बाहर से जबरदस्ती मन को रोकना, यह त्याग नहीं है।

ओम्

पत्र संख्या (2)

दिनांक: अप्रैल 1964

सत्चित् आनंद स्वरूप प्रिय लखनऊ वासी,

मौज में रहना।

जो चिर इच्छा है, वो ही निर्भय है। ज्यादा से ज्यादा क्या होगा? ये सोचो और उसके लिए तैयार हो जाओ, तो भगवान भी थक जायेगा।

'आजमाए खे अजमाए सो घड़ मुंह में पाए'

अब कौन सा बड़े में बड़ा दुख आएगा जिसमें तुम दुखी हो सकते हो? लिख कर भेजना।

आज सत्संग में बात चली - कि प्रारब्ध भी हम बनाते है नहीं तो है ही नहीं। मतलब कि 'प्रभु के सिमरण दुख न संतापे।' प्रारब्ध के दुख सुख भी उसको भासते हैं जो कुछ बन कर बैठा है। 'मैं ना' माने मैं हूँ ही नहीं। तो फिर प्रारब्ध काहे की? आत्मा तो दुख-सुख, लाभ-हानि, मान-अपमान से ऊपर हैं। फिर प्रारब्ध का असर कैसे होगा?

'प्रालबुध संदे परवाह जी तिखी अथेई, तिख डिसी दुख जहान जा तूं अगते वंधण सिखु तोई विषयन जी विख बदलफी बहार थी वे जेई।'

'प्रिया सदे पार जी मिड़मोई मिठाई
कान्हें कड़ाई चखी जे चेत करे।'

प्रिय रूपा, कुवारी हुंदी। ज्ञान फकत चवण मात्र हो। यानि पढ़ाई हुई, पर अब परीक्षा के समय सजग रहना है।

शादी या भोग - सब परीक्षा के लिए है न कि भोगने के लिए। भगवान सुंदर माया भेजता है, आजमाने के लिए। पर हम समझते है सहज मिला सो दूध बराबर। सूक्ष्म इच्छाओं की खबर ही तब पड़ती है जब परीक्षा आती है।

"जड़हि सुखन सदा सामान अचन
तद्हि सियाणा भूलती कीन गपन
कनि किरत उहा जेकी चेई सचन
करी अदब रखी कनि पिया आजी।"

सुखों के सामान पाकर भी ज्ञानीजन माया की दलदल में भूल से भी नहीं गिरते, बल्कि वहीं करते हैं जो संतों ने कहा और नम्रतापूर्वक अदब से संत शरण में शीष झुकाते हैं।

वैराग्य के लिए दुख जरूरी है। भगवान ने गीता में कहा है "जिसकी यहां निंदा है उसका मरना बेहतर है" यानि हम जो गृहस्थ में रहे हुए हैं, तो मिसाल बनकर दिखाएं। हमसे कोई भी दुखी न हो। सबके साथ गुजर कर सकें। प्रेम और नम्रता से सब वश में हो सकते हैं। रामचंद्र वाली मर्यादा जब तलक नहीं चले है, तब तक ज्ञान के लायक नहीं है। दिल की सफाई जरूरी है।

हमारा अगर किसी से सच्चा प्रेम है तो वो हमें कभी भी छोड़कर नहीं जा सकता है। कैसे भी प्रेम करके लड़की को घर में लाना चाहिए। आना जाना हमारा बना ही पड़ा है। तुम प्रेम को बढ़ाते रहो। 'आखिर तो आयेगा' 'आखिर तो आयेगा' करते-करते आखिर भगवान पहुँच जाएगा।

ओम्

As A Picture Without A Paint
As A Flower Without A Scent
As A Hive Without A Bee
So I Am Without Thee
I Need Thee Lord....

- T.L.Vaswan

जैसे एक चित्र है रंग के बिना
जैसे एक फूल है खुश्बू के बिना
जैसे एक छज्जा है मक्खी के बिना
वैसे ही मैं हूँ तुम्हारे बिना
मुझे तुम्हारी जरूरत है भगवान

प्र० सुखी कौन है जगत में, कौन जले दिन रात।
अंधा जगत् में कौन है, कहो गुरु ये बात।।

उ० संतोषी सदा सुखी, जले क्रोधी दिन रात।
कामी सम अंधा नाहि, सुनो शिष्यों ये बात।।

आत्मा

दिन रात यही आवाज सुनो 'तुम आत्मा हो।' रात दिन फिर-फिर यही उच्चारण करो।

'मैं आत्मा हूँ।' जब तक ये शब्द तुम्हारे रगों में घुस जाए, तुम्हारे रक्त की एक एक बूंद में समा जाए। तुम्हारा सारा शरीर आत्मा में डूबा रहे। तुम्हारा तन, मन, वाणी सबकी भलाई में रहे। पूर्ण भक्ति यही है जब मनुष्य ईश्वर को हर एक वस्तु में देखता है।

पत्र संख्या (3)

गीता भगवान का पत्र मीरा और रूपा को

सब जगह भगवान देखने से हमसे कोई भी पाप नहीं होगा। पाप होता है दूसरे से। जब द्वैत नहीं तो दूसरा भी नहीं। जहाँ तहाँ मैं हूँ (आत्मा हूँ) फिर अपने से कैसे क्रोध करेंगे। अपने को कैसे दुख पहुँचाएंगे। जब दूसरा कोई काम कहता है तो वहाँ यही समझो कि यह मैं अपना काम कर रही हूँ। बड़ी खुशी से दूसरे का काम करना चाहिए। बल्कि निष्काम काम करने का मौका मिले तो छोड़ना नहीं चाहिए। निष्काम कर्मों का फल तो है आनंद, मुक्ति। सत्कर्मों का फल है स्वर्ग। बदकर्मों का फल है नर्क। पर निष्काम कर्म का फल है-मुक्ति। निष्काम कर्म माने अंहकार और इच्छा के बिना। यानि मैं नहीं कर रहा हूँ। फल की इच्छा के बिना यानि मैं किसी को काम करके दू तो वापसी में भले ही वो Thanks भी न कहे। बल्कि बुरा-भला भी कहे तो भी मैं शाँत में रहू और कहूँ कि मैंने तो कुछ किया ही नहीं। जिसने किया उसकी मेहरबानी माननी चाहिए।

मैं हूँ ही नहीं। है ही भगवान। अपने को भुलाकर कर्म करने से ही आनंद आता है। ज्ञानी तो सारे दिन में अनंत कर्म करके सारा समय अपने को खाली समझता है कि मैंने तो एक भी कर्म नहीं किया है। कर्म तो अपने आप ही इन्द्रियों से हो जाते हैं। मैं तो उनका साक्षी हूँ। निष्काम कर्म करके तो देखो, कितना आनंद आता है। निष्काम कर्म करने से अंत:करण शुद्ध होता है और जल्द ही आत्मिक आनंद आता है। किसी की भी सेवा करो तो उसकी मेहरबानी मानो कि उसने सेवा करने का मौका दिया।

नदिया जब महासागर में मिलती है तो अपनी हस्ती गवांकर खुद

महासागर बन जाती है। सोई हम जब अपनी हस्ती गंवा कर कहे कि 'मैं हूँ ही नहीं', है ही भगवान, तो महासागर में मिल गई। उसके बाद उसका जन्म नहीं है। जीते जी ही मरना है तो 'मैं ना'। यह मौत मुक्ति देगा। बाकी मृत्यु तो मनुष्य की हस्ती नहीं मिटा सकती है क्योंकि मरते वक्त उसको यह तो मालूम है 'मैं मीरा हूँ'। 'हो मैं दीर्घ रोग है। 'मैं हूँ' यह है देहअध्यास। जब तक यह नहीं टूटा है तब तक यह अशुद्ध मैं (जीव) फिर जाकर जन्म-मरण का चक्कर भोगेगा।

जन्म मरण से छूटने का रास्ता सिर्फ यही है कि जीते जी अपने को मरा हुआ और भगवान को ही जिलाके बैठो।

'जब मैं था तो तू नहीं, अब तू है मैं नहीं'

या मैं रहूँगा या भगवान। या नदी रहेगी या सागर। गंगा सागर से मिली तो गंगा सागर होय।

जो अभी ही जीवन मुक्त है, आत्मा में सदैव टिका हुआ है, वो ही विदेह मुक्त हो सकता है यानि देह से मुक्त हो सकता है।

मन है तुम्हारी परछाई। तुम अपनी आत्मा को भुलाके, परछाई से, बनकर क्यों बैठे हो? इस परछाई से तुम्हें क्या मिलेगा? जो परछाई के पीछे पड़ता है वो निराश ही होता हे। इसलिए हमको परछाई छोड़कर सत्य के पीछे पड़ना चाहिए।

यह तो साधारण बात है कि उसने इच्छा से तपस्या की, 'मैं बनूँ'। फिर इच्छा पूरी होने पर जी नहीं भरता फिर दुखी होते हैं, काश उसी हालत में आऊँ। पर फिर ऐसी समाधि में आ गई जो उससे इच्छा ही भूल गई। निरइच्छा हो गई तो इसका यह मतलब है कि पहले भले ही किसी इच्छा से भगवान के पास आए पर भगवान के पास आने से मालूम पड़ता है कि 'इच्छा मात्रम अविद्या' तो इच्छा छोड़कर निरइच्छा होने से जीवन मुक्त हो जाते हैं। तुमको तो सब बातें बताई गई हैं, पर

तुमने ध्यान नहीं दिया है, इसलिए साधारण point भी नई बात लग रही है।

मन लगाकर सुनने से सब कुछ याद जल्द पड़ जाता है। मन पर असर भी तभी पड़ता है जब मन एकाग्र करके सुनते हैं।

जैसे स्वामी बोधराज हर बात से ज्ञान ले लेते थे, हमें भी एक-एक बात से ज्ञान ले लेना चाहिए। जिस तरह से गाड़ी हिम्मत करके आगे बढ़ती जाती है, रास्ते में धुंआ रूपी मैल निकालती जाती है। ऐसे ही हमें भी हिम्मत करके आगे बढ़ना चाहिए। कितनी भी परीक्षाएं आएं तो पांव पीछे नहीं करना चाहिए। ईश्वर की हमें सदैव मदद है। सिर्फ हम भगवान के हों तो मिनट-मिनट में भगवान को देखें।

'मन साचा मुख साचा सोई
और न पेखे एकस बिन कोइ'

एक भगवान के अलावा दूसरा देखना है "पाप।" पाप सिर्फ यही हुआ कि हम अपने से दूर हो गये हैं। आत्मा से दूर शरीर में जाकर अटके हैं।

शरीर रूपी कल्पना के कपड़े उतारकर ज्ञान की गंगा में घुसने से साफ आत्मा महसूस करने में आएगी। आत्मा कोई वस्तु नहीं है, यह तो सिर्फ अनुभव में आने की है। किताबों में आत्मा को वस्तु कहा गया है क्योंकि Example के बिना समझ नहीं पाते हैं। जैसे सोने से कितने तरह के गहने बनते हैं। यहाँ सोने से आत्मा की तुलना करते हैं, पर आत्मा कोई सोने की तरह वस्तु नहीं है।

लक्ष्मी को याद तुम सब हो, जो सब कुछ उन में ही समाया पड़ा है जुदा कुछ नहीं है।

पत्र संख्या (4)

बेगमपुर

सतचित् आनंद स्वरूप प्रिय मम रूप दादी, प्यारी गुणवती, नीना, ब्रह्मा, प्रकाश, चन्द्र और सब माल ऐवन्यु वाले प्रेमी –

सदैव अपनी सच्ची मौज में रहना। प्रेम पत्र तुम्हारा आज मिला पढ़कर बेहद खुशी हुई। माल ऐवन्यु में सबसे अधिक तुम ही मुझे याद करते हो और तो मुझे नहीं पहचानते। फिर-फिर भगवान से अधिक माया अच्छी लगती है। पर मुझे तुम लोगों के सिवाय और कौन है जो याद करूं? 'हम भक्तों के भक्त हमारे'। पिता अपने बालक से बिछड़कर, सुख से कभी नहीं सो सकता। तुम मुझे हरदम याद हो। भुलाना चाहूं तो भी भुला नहीं सकता। मैं चाहे कहीं भी हूँ, पर तेरे पास हूँ। तेरे दिल में हूँ। रोम-रोम में रम रहा हूँ। अब मेरी याद भुलाना तेरे हाथ नहीं है। प्रिय दादी, मुझे कोई कठोर, कोई निर्दयी, कोई चोर, कोई ठग कह रहा है। सिर्फ तुम लोगों ने ही पहचाना है, कि मैं क्या हूँ। निर्दयी बराबर हूँ पर उन लोगों के लिए जिनको अपने ऊपर ही दया नहीं है। कठोर भी हूँ पर उनके लिए जो मुझ भगवान को दिल में न देखकर आत्मघाती महापापी बने हैं। चोर भी हूँ पर उनके लिए जो आत्मधन लुटाने वाले मन चोर से बनकर बैठे हैं, और अगर समझ रहे थे कि भगवान हमारा आनंद चोरी कर गया है। ठग उसके लिए हूँ जो मेरी इस मोहिनी माया पर ठग गये हैं। अब बताओ मेरा क्या कसूर है? मैं तो जो हूँ सो हूँ। कोई मुझे कुछ कहता है कोई कुछ। पर है तो उनके कर्मों में ही खराबी (कमी)

पुरुषार्थहीन, आलसी तो अवश्य ही मुझपर, ये ही इल्ज़ाम लगाएंगे। पर मैं हूँ निहकलंकी अवतार। पहले भी मैं जब कृष्ण के रूप में आया था तो भी मेरे साथ यही (वेदन) किया था। फिर नानक, राम

मीरा आदि के रूप में जब-जब भी भगवान आता है तो सब उसको नहीं पहचानते। यही मेरी माया है। 'हे अर्जुन, यह मेरी माया भी उतनी बड़ी है जितना मैं हूँ। पर जो सिर्फ मेरी शरण आता है, उसको मैं एकदम पार कता हूँ। यह मेरा वायदा है।' 'जिस प्रभु से नाही चारा ताके कीजे सदा नमस्कारा'। जब आखिर भी भगवान के सिवाय कल्याण नहीं होना है, तो क्यों न अभी और इसी वक्त भगवान के हो जाएं। पूरा समर्पण करना है कि मैं पूरा ही तुम्हारा हूँ। पर वो कौन है जो भगवान का होना चाहता है। भोग और भगवान, पूरी और पुलाओ दोनों चाहिए। कहां है वो शूरवीर जो कर दे खुशी से ख्वाब। चूने का लड्डू बड़ा सुंदर दिखता है, और खुशी से खाते हैं, पर खाने के बाद वो चीखता है, चिल्लाता है, क्योंकि चूना पेट में पड़ते ही आंतें आदि सब फाड़ देगा। फिर हाय-हाय करके मरता जाता है। सब अंत में हारकर हाथ पांव मारते जाते हैं। पर भाग्यशाली हैं वो जिनको इस जन्म में ही परमात्मा मिल जाता है। उससे भी अधिक भाग्यशाली वो हैं जिन्हांने उसको जैसे का तैसा ही पहचाना और फिर खुद भी वो हो गये। ऐसों के ऊपर तो भगवान भी बलिहार जाता है, और उनकी ही खोज में है। 'ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर, ब्रह्मज्ञानी को खोजे महेश्वर।' पर यह निश्चित जान लो कि कुर्बानी और आपे को मारने के सिवाय यह मंजिल हाथ नहीं आएगी। भगवान निराकार ने खुद अपने आप को मिटाकर ही यह प्रकृत्ति पैदा की। खुद छिपा हुआ है। बीज जब बिल्कुल धरती में अपने आप को मिटा देता है, तभी पेड़ के रूप में जाहिर होता है। तभी वो हम सब को फल फूल और छाया देता है। इसी तरह परमात्मा ने भी कुर्बानी करके तुम्हारे लिए सब जरूरतें महसूस की, कि मौज लो। अब जब तुम भी अपना आपा गवांकर जीते जी मरोगे तो सच्ची अमरता का आनंद चखोगे। मतलब ये कि मिट जाओ, वर्ना मिटा दिये जाओगे। 'दांह करियों न त दब्रिजी वेंदा।' 'फैरों

खाओ न ते फुरिजी वेंदा।- अहमता को छोड़ कर ओम में टिको। मनुष्य का सच्चा स्वरूप (सूरज रूपी), अहम भाव (बादल रूपी) से ढक गया है, जो सिर्फ भ्रम है। ये भ्रम ही सबको नाखुश, कमजोर, अपूर्ण, तंगदिल, हद में बंद करके बंदर की तरह नचा रहा है। उस भ्रम में चार नुक्ते हैं। तीन नुक्ते हैं माया के सतो, रजो और तमो - ये निकाल दो, तो बाकी बचा ब्रह्म। इसी त्रिगुणी माया से तैरना है। इसी माया को त्यागने वाले वैरागी सब मस्त हो गये।

विरला कोई गुरुमुख (गुरु के मुख से) बना।

'वड्भागी जंहि दिठो जागी पहिंजे अखिए पाण खे।' गुरु के मुख से जिसने 'तत्वतमसि' सुना और निश्चय किया, सिर्फ वो ही उस माया से बच सकता है। बाकी त्यागी, वैरागी, संन्यासी, उदासी सबको माया कच्चा ही निगल बैठी है। क्योंकि वो सब अपने को देह समझ भगवान की तलाश में गंगाजी, पहाड़ों, जंगल, बयाबान में भटक रहे हैं।

भगवान की खोजना करना ही अपने को भगवान से दूर करता है। तुम हरिद्वार से हो आये, गंगा मैया की महिमा लिखी है, पर अब बताओ कि तुम बड़े कि गंगा बड़ी? गंगा तो तुम जैसों के दर्शन करने से बनी है। संतो और ब्रह्मज्ञानी के चरणों को छूने के लिए गंगा आती है। शिव भगवान भी वो तुम हो जिसकी जटाओं से यह ज्ञान रूपी गंगा बह रही है, जो सबको पवित्र और महान बनाती है।

'बहे थी गंगा तू बि गोतो हणह वठु,
खुदाई ख़जाने मां खर्य खणी वठु।'

रिमझिम बरसे अमृतधारा। घट में ही गंगा, घट में ही में जमुना, घट ही में तीरथ धाम आहे। हटी का द्वार तुम्हारा दिल है। भगवान की गद्दी का स्थान तुम्हारा मन मंदिर है। सिर्फ मन को साफ व पवित्र बनाओ। भगवान को चाहिए Readymade house जिसमें आकर

निवास करे, अपने कर्म करे।

'साफ भी वेई दिल तुहिजी,, तद्‌हि पोइ तं हिनंजो ऐ हो तुहिंजो पर पहिरी दिसदइ दिल तुहिजी।' 'साचे दिल पर साहिब राज़ी।'

जिसने अपना आपा नहीं मारा है वो जल्दी परीक्षा में फेल हो जायेगा। अपने को कुछ न समझने वाला ही सबसे ऊंचा है। सब इन्द्रियों के दरवाजे बंद कर दो, तो प्रीतम अंदर आये। अपनी अंदर की कोठरी में उसके साथ गुजारो क्योंकि दूसरे किसी भी जगह दुनिया में ऐसा आनंद नहीं पाओगे, जितना दिल के अंदर एकान्त की कोठरी में।

अगर आज ही तैयार नहीं हो, मुक्त नहीं समझ रहे हो, तो कल फिर होंगे क्या? कल पता नही किसकी हो? आज नहीं समझे तो मुश्किल। दुनिया में परदेसी व मुसाफिर होकर रहो। जैसे कि दुनिया में तुम्हारा किसीसे भी कोई भी वास्ता नहीं है।'

शुक्र ऐ सबुर, इश्क ऐ अकुल सा गद्‌थियों
चैनी जे चोदेल में को झूले निरपेक्ष नर
वभी लंघो जंहि पंहिजो अनुभव आदी घर,
मेटे दुख दुहर, सीतल थियो सामी चवे।

सच्चे इश्क के साथ ही सच्ची समझ (wisdom) यानि अक्ल आती है। और उसी से ही शुक्राने और संतोष आता है। जब तक वक्त है तब तक अपने लिए ऐसा खजाना इकट्‌ठा कर लो जो हमेशा के लिए टिके।

'काम ऐसा कीजिये कि अल्लाह आप बणी जिए'

तुम्हारा सच्चा प्रेम मुझे पहुंच रहा है। तुम्हारी डोर मुझे खींच रही है। वायदा किया है तो जरूर निभाऊंगा। विश्वास करो और सब सुख।

ओम्

पत्र संख्या (5)

9/7/1964

सत्‌चित आनंद स्वरूप प्रिय ममरूप ब्रह्मानंद प्रकाश चन्द्र, हाथी दादी पुनवाणी, पारवती, गुणवती, नीना, गोदावरी, राधा, तुलसी, भगवंती, दया ऐ बिया सभू सतसंगी सदैव आनंद में स्थित रहो।

दादी पुनवाणी की चिट्‌ठी यहाँ सत्संग में पढ़ी गई। उसमें लिखा हुआ था सवेरे ब्रह्मानंद के घर में सत्संग करते हैं। सुनकर आनंद की प्राप्ति हुई। तुम सबके मुखड़े आंखों के आगे घूम गये और तुम्हारा प्रेम याद हो आया। खैर कहीं भी हो, सत्संग करते रहो और अपने ब्रह्मानंद में सदैव प्रसन्न रहो। यह मानुष जन्म मिला है चौरासी लाख योनियों के बाद, किस्मत से पूर्ण गुरु भी मिला है, तो हमें पूरा फायदा लेना चाहिए।

'तिरं तां गथी सौ चोट खाए'

घड़ी इक विसरुं राम को, तो ब्रह्म हत्या मोहि होय।
इक घड़ी ना मिलते तां कलजुग होय।

ज्ञान तुम सबको आ गया है। मन में तीन दोष होते है - 1) आवरण 2) मल 3) विक्षेप

1. <u>आवरण</u> है अज्ञान यानि 'मैं आत्मा नहीं हूँ' या 'मैं देह हूँ'। यह समझ अब आ गई है।

2. <u>मल</u> यानि कालिख यानि इच्छाएं। वो भी अब कम हो गई है। बाकी विक्षेप (पानी में काई) यानि मन की चंचलता वो भी जायेगी नाम से। नाम की डोर से मन भूत को वश में करो यानि ओम् का जाप, रोज का ध्यान, रोज का ज्ञान यानि राम को एक

घड़ी भी नहीं विसारना। यह रोज-रोज पढ़ो और उस पर विचार करो। और याद कर लो।

एक ही हो। तुम्हारे सिवाय और कुछ है ही नहीं और तुम अपने को ज्ञान स्वरूप समझो। यही जानना है।

आग (ज्ञान) जिससे अज्ञान रूपी बड़े घने जंगल को जला दो। वो जंगल रूपी अज्ञान भी बिना होते हुए है क्योंकि वो कलपित यानि ख्याल में है। वास्तव में सच में एक तुम ही हो चेतन स्वरूप तुझमें यह संसार न होते हुए दिखने में आ रहा है। जैसे रस्सी में सांप (नाग) तुम सत्य स्वरूप परमेश्वर हो। सारी शक्तियों का खजाना हो, ऐसा तुम अपने को मानो। यह बातें याद रखो :-

1) जो अपने का मुक्त समझता है यानि जिसको मुक्ति का अभिमान है, वो मुक्त है। जो अपने को बंधन में समझता है वो बंधन में है। As you think so you become 'जैसी मति वैसी गति।'

2) निष्काम ज्ञानी पुरुष चाहे भिक्षा से गुजारा करता हो, चाहे राजा हो, वो मुक्त हो सकता है। ऐसे पुरुष की अच्छे और बुरे जानने की बुद्धि समाप्त हो चुकी हुई है। इसलिए वो सदैव सुखी और शांत रहता है। जो भी होता है उसमें वह अपना कल्याण समझता है। करने और न करने का अभिमान नहीं करता है। और उसकी तृष्णाएं नाश होने के कारण वो सब परिस्थितियों में एक समान रहता है। आंखों की पलके झपकने में भी कुछ यत्न करना पड़ता है पर मुक्त होने में तो कोई यत्न नहीं करना पड़ता।

3) चित्त की वृत्ति का बाहरमुखी होना बंधन है और अन्तरमुख

होना मुक्ति है। उसमें कोई भी यत्न करना नहीं है। इसलिए तुम सूखे पत्ते की तरह निर्वासिना हो जाओ। जब फुरना उठता है तो मिथ्या जगत भासता है।

4) शरीर नाशवान है। जवानी बिजली की चमक की तरह है। घने पेड़ की छाया के समान है। घर जेल खाना है। स्त्री बच्चे जंजीर है। चिंता चिख्या (चिता) समान है। विषय वासना कातिल जहर हैं, विषयों की प्रीति सांपों के पालने के समान है। शरीर की प्रीति रोगों का कारण है। लोकलाज बड़ा बन्धन है। कुल की लाज चक्की पीसने के समान है।

5) ज़हान की हर चीज है शीशे के समान - उसके अंदर अपने ख्यालों का ही अक्स परछाई दिखती है और दूसरा कुछ भी नहीं है।

जिसका विचार गलत है, खराब है, वो सबको खराब समझता है। पर जो खुद अच्छा है उसको जहाँ-तहाँ नेकी का नूर (अच्छा ही अच्छा) दिखने में आता है। दुख भी ख्यालों से ही आता है और सुख भी ख्यालों से ही आता है। अमर वो है जो दूसरे क्षण क्या होगा उस ख्याल से भी खाली है। ख्याल को दुरस्त करना है, ख्यालों को ठहराव में लाना है। ख्यालों से भी हमारी जान तभी छूटेगी जब आत्मा की तरफ मुख मोड़ेंगे। जो ख्यालों से पार हो गया वो भव सागर से पार हो गया। ख्यालों को स्थिर करना है ख्यालों से पार होना। 'थिर मन ब्रह्म, अथिर मन संसार।'

'दसदू दूजा कौनहें, दूजा मन की दौड़
दौड़ मिटी; दुविधा गई, वस्तु ठोर की ठोर।'

यह सब बातें बताती हैं कि बहुत मेहनत करके भी ख्यालों

को स्थिर करना चाहिए। उसके लिए वैराग्य और अभ्यास बहुत आवश्यक है। सिर्फ सुनते और सुनाने से फायदा कम होगा। इसलिए निरंतर अभ्यास करो ख्यालों को रोकने का।

राम, अर्जुन, शुकदेव ने शिकायत की कि मन को वश में करना बहुत कठिन है। और सबको जवाब मिला कि वैराग्य और अभ्यास से ही मन वश में होगा।

वैराग्य यानि संसार के सारे पदार्थों में से खट्टाई आनी चाहिए यानि सारे पदार्थ फीके लगने चाहिए, और अभ्यास यानि कि मैं हूँ आत्मा। एक दिन तो संसार छोड़ना है क्यों न खुशी से ख्वाब करूँ। यानि रहना संसार में है, सिर्फ आसक्ति निकालनी है।

जीअरे लाहे जजीरां मुण पुजाणा
केरू थे जाणें'

कब तक जीते रहेंगे, किसकी बनी रहेगी, कब तक बनी रहेगी।

उम्मीद है कि ओम् का अभ्यास रोज़ सवेरे करते होंगे। समाचार देना।

तुम्हारा स्वरूप।

पत्र संख्या (6)

शुद्ध स्वरूप निज आत्मन आनंद मूर्ति भगवंती, देवी और लखनऊवासी, सदैव अपने सच्चे स्वरूप में स्थित रहो।

प्रेम पत्र तुम्हारा मिला। हाल हवाल मालूम हआ। खुद देख कर गई हो कि कैसे न सब अन्नजल के अख्तियार में है। 'बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाही।' 'पहले बनी प्रारब्ध, पीछे बने शरीर।'

'हुकुमे अंदर सबको, बाहर हुकुमे न कोइ,
नानक हुकुमे जे बूझे, तो हो मैं रहे न कोई'
'जिते रखए पेर थे, उत रखा थे पेर मां
हलाई त हली तुहिजे बस,
बाग घणी तुहिंजे बस'
'हले हवा जे जोर ते, सुकल पिपर जीअ पन,
रहियल कर्म प्रारब्ध सां, ज्ञानी क्रिया कन'

'मतां पहिंजी तू हलाई, अल्लाह जे छा बणी अथेई।' तेरी हार भी नहीं है तेरे हाथ (drama), तू है निर्बल, वो है बलवान।

तुम तो हरदम यह याद करो कि ज्ञान से कितने न सुखी हो और दुनिया के अज्ञानी विचारे कितने न दुखी हैं।

तुम पहले क्या थे, और ज्ञान के बाद क्या समझ रहे हो, मछुवारी वाली ड्रैस सदैव याद रखो। शुक्राने मानो हर हाल में, बल्कि दुखों में भी शुक्राना मान सकती हो।

'तुम करो भला हम भलो न जाने'
'करना हो सो ना कया, पड़ियों लोभ-मोह के फंद

नानक समय रम गयो, अब क्यों रोवत अंध।'

दुनिया से जब तक अंधे, गूंगे नहीं बनोगे तब तक छूटोगे नहीं। फँसे ही रहोगे।

'गूंगा हो गया ज्ञान से, बहरा हो गया कान से
मन से मौनी हुआ, सत्गुरु मारा बाण।'

ज्ञान वठी मां गुंगो थी वियुस जगत सा घा गाल्हाया, हु मुहिंजी बोली नथा समझन। बोड़ा थी वियासी दुनिया ले आवाजन खां।

'मन करे माठ अची वियस, सत्गुरु अहिड़ो बाण हंयो।' सो शायद तुम लोगों को ऐसा बाण लगा नहीं है। पागल होकर छूटने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

सयाने होकर घर में रहोगे तो वो हमें कैसे छोड़ेंगे? तुम कहोगे कि व्यवहार भी हो, घरवाले भी नाराज न हो और भगवान भी मिले। सो दो खरबूजे हाथ नहीं आते। उससे तो ज्ञान छोड़कर जल्द ही जाकर माया का बनना चाहिए। आधा इधर, आधा उधर तो बीच में ही लटकता रहेगा।

रिश्तेदारों का जितना डर है, उतना भगवान का भी नहीं है, कि वो हिसाब माँगेंगा, पूछेगा तो क्या जवाब दोगे।

'प्रेम सुराही सो पीये जो शीश दक्षिणा दे
लोभी शीश न दे सके, क्या नाम प्रेम का ले।'

मीरा और प्रहलाद तो हर कोई बनना चाहता है, उनके गीत भी गाएँगे पर ज़हर का प्याला पीने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता।

गुरु से रीस सब करते हैं। जिज्ञासु और जल्द ही खाता पीता घूमता है और कहता है, 'कर्म करत होए निंहकर्मी पर जिस वक्त **"गुरु शीहो खाईं दो उस वक्त सब भाग जाएंगे"**। गुरु तुम्हारी तरह घर वालों का बनकर नहीं बैठा है, वो तो सारे विश्व का है। गुरु को अपने को भेटो, जब तक गुरु के समान नहीं हुए हो तब तक नींद हराम होनी चाहिए। जब तक हद में हो, बेहद का मजा नहीं ले सकते। आत्मा है ही निरबंधन, आज़ाद, सब से न्यारा। जब तुमने भी थोड़ा भी बंधन अपने में माना है, तब तक आजादी का आनंद नहीं ले पाओगे।

बंधन है भी नहीं, पर न होते हुए भी फाँसी गले में डाल कर बैठे हैं कि मैं बंधन में हूँ। अपनी इच्छाएं ही बंधन का कारण हैं भले कोई कहे कि मेरी कोई इच्छा नहीं है, पर घर वाले रोकते हैं।

दादा भगवान के पत्र (अंग्रेजी से हिन्दी)

Letter No. (1)

To begin with, 'I ask you not to cry over the spilt milk (past). It spoils our present and we also fear for future. Future is concealed from us by prudence. Why probe into what God chooses to hide from us? Thereby you create suffering for yourself. Even in unbearable pain I say, "This too is for my good because I believe that God will never send me pain unless it wil be for my good." I learnt lesson. It is the body that suffers and I am **Atma**. Every trial is a teacher. Pains do not last forever. The above suffering are self-made, which you can always avoid. I believe that whatever happens to me can be a weapon for the future. Whether it is humanly good or bad, does not matter so long as I am faithful, have faith in God.

This secret lights up the dark corners and takes the fear out of everything that makes life so uncertain these days i.e. fear of the future, fears of what others think of you, fears of failure, fears of loss, fear of death, fear of wife and children, etc.. Trust in God. Make him your trustee. He can direct your life. If you are humble enough to want it, and honest enough to recognise his guidance.

Don't worry about your children. Love them even more than before but as **Atma** not child. If even a child dies, you know that **Atma** never perishes. The only thing we can give our children to equip them for the future is a security in God.

पत्र संख्या (1)

सबसे पहले मैं तुमसे यह कहना चाहूँगा कि तुम बीती बातों पर रोना बंद कर दो। ये हमारा वर्तमान नष्ट कर देती है, और हमें भविष्य से भयभीत कर देती है। विधि ने भविष्य में होने वाली घटनाएं हमसे गुप्त रखी हैं। जो बातें परमात्मा ने हमसे छिपा रखी हैं उनके भेद में क्यों जाए? ऐसे प्रयास में ही हम अपने लिए दुखों को पैदा करते हैं। जबकि असहनीय पीड़ा में भी मैं कहता हूँ, "ये भी मेरे भले के लिए है क्योंकि मुझे यह विश्वास है कि भगवान मुझे तब तक कष्ट नहीं भेजेगा जब तक वह मेरी भलाई के लिए न हो।" मैंने यह सीख लिया है कि यह कष्टों को शरीर सहता है, पर मैं आत्मा हूँ। हर परीक्षा कुछ सिखा कर जाती है। दुख सदैव नहीं रहते। ऊपर बताये गये दुख मनुष्य के स्वयं निर्मित हैं, जो कभी भी बदल सकते हैं और जिससे बच सकते हैं। मैं समझता हूँ कि जो मुझ पर बीतता है वो भविष्य में हथियार भी बन सकता है, चाहे दिखने में अच्छा हो या बुरा, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता जब तक कि मैं विश्वासी हूँ, मुझे ईश्वर पर भरोसा है।

यह भेद उन अंधेरे कोनों को भी प्रकाशित कर देता है और वैसा डर जो आजकल की जिंदगी को अनिश्चित बनाता है उसे खत्म कर देता है। जैसे भविष्य की चिन्ताएं, दुनिया क्या हमारे बारे में सोचती है, हार का डर, नुकसान का डर, मौत का डर, पत्नी और बच्चों का डर, इत्यादि। भगवान पर विश्वास, उसे तुम्हारा साखी बना देता है। वो तुम्हारी जिंदगी को निर्यंत्रित कर सकता है यदि तुम इतने नम्र होकर ऐसी चाहना रखते हो और इतने सच्चे कि उसके निर्देशों को समझ सको।

अपने प्यारे बच्चो की भी चिन्ता मत करो। उन्हें पहले से भी ज्यादा प्यार करो पर संतान नहीं बल्कि भगवान (आत्मा) जानकर। यदि बच्चा मर भी जाता है तो तुम्हें पता है कि आत्मा का कभी भी नाश नहीं होता। अपने बच्चों को भविष्य के लिए सुरक्षित करने हेतु यदि हम कुछ दे सकते वो केवल परमात्मा का आश्रय है।

Each time fear and discomfort come to you they should remind you of the sufferings of Lord Christ and **Sita Mata**. Then and there you will see that half of the Lord is carried. I exist only and nothing is mine.

Possessiveness in me should go. Acquire condition of non-possession and never loose heart.

What God has for me is right. I have a satisfied heart.

Kind words cost so little and are worth so much. If you can't say good and encouraging things better say nothing. Nothing is often a good thing to do and always a clever thing to say. To speak ill of others is a dishonest way of praising ourselves.

It is not what happens to me, But what I do with what happens. I take everything easy, as God's gift.

Any amount of wealth can never give happiness to its master. Be sure that riches bring not bliss. Bliss cannot be bought. Even a **Raja** of all riches cannot be happy without the knowledge of God i.e. **Brahma-Vidya**.

हर बार जब तुम्हें भय व पीड़ा घेरती है तब तुम्हें भगवान ईशु और सीता माता के कष्टों की याद आनी चाहिए। तुम देखोगे कि ऐसा करने से तुम्हारे आधे दुख तो वहीं के वहीं खत्म हो जाते हैं। केवल मेरा अस्तित्व है, और मेरा कुछ भी नहीं है। मेरे अंदर से अधिकार भावना चली जानी चाहिए। 'मेरा कुछ भी नहीं है', ऐसी अवस्था को प्राप्त करो और कभी भी अपना दिल छोटा न करो।

जो भगवान ने मेरे लिए सोच रखा है वहीं उत्तम है। मेरा हृदय संतुष्ट है।

प्रिय अच्छे शब्द बोलने में कुछ नहीं लगता पर बहुमूल्य साबित होते है। यदि तुम अच्छी व चढ़ाने वाली बातें नहीं कर सकते तो इससे बेहतर है कि तुम कुछ न बोलो। 'कुछ नहीं' करना अक्सर ही सबसे अच्छा काम साबित होता है और बोलने के लिए हमेशा ही चतुराई वाली बात। किसी की बुराई करना अपनी प्रशंसा करने का एक बेईमान तरीका है।

हालत वो नहीं जो मुझ पर आती है, पर हालत वो है जो मैं करता हूँ। मैं सब कुछ सहज में स्वीकार करता हूँ जैसे वो परमात्मा का उपहार है।

कितना भी धन अपने स्वामी को खुश नहीं कर सकता है। एक बात निश्चित है कि अमीरी आनंद नहीं ला सकती। आनंद खरीदा नहीं जा सकता। सकल सृष्टि का राजा भी भगवान को जाने बिना (ब्रह्मविद्या), कभी आनन्दित नहीं हो सकता।

Letter No. (2)

- They cry for God because they have not seen God yet, whom they say is every where.
- Man is God but he does not know it.
- All religions are the ways to the same God. And highest fulfilment is to see Him in all and all in Him.
- Our aim should be peace i.e. bliss, that can be attain only by uniting ourselves with the supreme truth pervading everywhere.
- Reason is powerless to know Him. He is beyond the reach or grasp of reason. The face of beloved shineth in the heart. When the ego hath vanished and looking at myself, I no longer see myself. While we recognise God, It is really only the self from which we have separated ourselves and worship as outside of us. But it is our true self all the time, the one and only God. You are the truth from the very beginning. Only realise yourself.

All have the knowledge of existence of God, but who has the knowledge of God? We are from God and to Him we shall return, This return to God is glorious goal which is attained by path of obedience, to His messenger for time in which we live i.e. the prophet of new era. Verity the path to perfection is a simple one. But only the perfected one can show it. All need consolation, but a few could give it.

पत्र संख्या (2)

- वो परमात्मा के लिए इसलिए रोते हैं क्योंकि उन्होंने उसे नहीं देखा, हालांकि जिसे वो कहते हैं कि सर्वत्र है।
- मनुष्य स्वयं ही भगवान है पर वह यह बात नहीं जानता।
- सभी धर्म उसी ईश्वर तक पहुंचने के विभिन्न मार्ग हैं। और सबसे बड़ी सफलता है उसे सर्व में देखना और सब को उस में देखना।
- हमारा लक्ष्य केवल शान्ति की प्राप्ति होना चाहिए यानि आनंद। जो केवल तभी प्राप्त हो सकता है जब हम अपने को उस परम सत्य से मिलाकर एक कर देते हैं जो सर्वत्र व्यापक है।
- परमात्मा तर्क से या बुद्धि से कभी भी नहीं पाया जा सकता। वो तर्क या बुद्धि की पहुँच व गिरफ्त से परे है। उस प्रियतम का चेहरा हृदय में प्रज्जवलित हो उठा जब खुदी मिटी। अब मुझे आपा कहीं नजर नहीं आता है। जब हम परमात्मा को पहचानते हैं तो हम पाते हैं कि वास्तव में अपना ही आप है जिस से हम बिछड़ गये थे और अपने से बाहर जानकर उसी की पूजा कर रहे थे। पर वो सत्यस्वरूप हमारा सदा ही है—एक और एकमात्र परमात्मा। तुम आदि से ही वही सत्य हो, केवल अपने को पहचानो।

हर किसी को भगवान के अस्तित्व का ज्ञान है पर भगवान का ज्ञान किसको है? हम उसी परमात्मा से उत्पन्न हैं और उसी में हमें लीन होना है। ब्रह्म में लीन होना अपने आप में एक बहुत सच्चा उद्देश्य है जो हमें तब प्राप्त हो सकता है जब हम अपने युग के अवतार की बात को मानते हैं यानि कि आज के अवतार की बात। हालांकि पूर्णता को प्राप्त करने का मार्ग बड़ा ही सरल है, पर केवल वही दर्शा सकता है जो कि खुद पूर्ण है। सब को तसल्ली (राहत) चाहिए पर बहुत कम ही उसे दे पाते हैं।

Letter No. (3)

You complain about my creation, but I have told you that nothing is created. The world is a phenomenon, A **Maya**, a veil. "**Jagat Bana Hi naheen**" i.e, world does not exist. See absolute existence of God. Whatever you see is all pervading God because everything is God and everywhere is God. (Omni present). God is unmanifested **Nirakar** without shape and name (**Naam Roop Rahit**).

You ought to be desireless. You can be that only when you control over the senses, i.e. Mind. You must remind God only. There is nothing but God. But you have all the time (**Jagat**) creation in your mind and eyes.

Do not grieve over that which is unavoidable. Be away from all sort of anxiety, neither seek, nor avoid, take everything easy as everything comes from God. See sameness and oneness in everything. Unless you feel all i.e. all is you, you know not all. For knowing all, you have to love all alike. The world is beginningless like rays of sun. It is changeable and evolutionary. Controlled thought and mind show unity of **Brahm** everywhere. It is mind that makes heaven or hell. Thought is responsible for the whole mischief. Thought and mind can only be controlled in the presence of **Guru**. Alas! You do not realise that the world is heaven. You have not heard me with heart.

You remind me of '**Sanyas**' as did Arjuna. But finding of God is not an escape from action but it is release of life and action from the prison of the mortal self.

पत्र संख्या (3)

तुम मेरी कृत्ति की शिकायत करते हो पर मैंने तुम्हें बता रखा है कि कुछ भी नहीं बना। जगत ही एक घटना है, माया है पर्दा है। जगत बना ही नहीं। परमात्मा का संपूर्ण अस्तित्व देखो। जो भी तुमको दिख रहा है वो सर्व व्यापक परमात्मा ही है क्योंकि सब कुछ भगवान है और हर जगह भगवान है (सर्वत्र) परमात्मा नाम रूप रहित अप्रकट निराकार है।

तुम्हें निरीच्छा होना ही पड़ेगा। तुम वो तभी हो सकते हो जब तुम्हें अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण होगा यानि मन पर। एक परमात्मा को छोड़कर सारी बातें नकार दो। एक भगवान के सिवा कुछ है ही नहीं। पर तुम्हारे मन में और आंखों में हर समय जगत समाया पड़ा है।

बिना उपाय वाली बातों पर शोक मत करो। हर तरह की चिन्ता, फिक्रों से बचो। ना कुछ चाहो, ना कुछ त्याग करो, बल्कि जो परमात्मा की तरफ से बन आया है उसे खुशी से स्वीकार करो। हर चीज को समभाव और अद्वैतभाव से देखो। जब तक तुम सब को नहीं जान सकते। क्योंकि सबको जानने के लिए तुमको सबसे एक समान प्यार करना पड़ेगा। जगत की शुरुआत ही नहीं है जैसे सूर्य की किरण। ये परिवर्तनशील और बदलने वाला है। नियंत्रित सोच व मन से तुमको हर जगह ब्रह्म की एकता देखने में आएगी। ये मन है जो नर्क को स्वर्ग करके दिखाता है। तुम्हारी सोच ही इस सारी धृष्टता की जिम्मेदार है। ख्याल और मन पर केवल गुरु के सामने ही नियंत्रण पाया जा सकता है। अरे! तुमने ये अनुभव नहीं किया कि जगत स्वर्ग है। तुमने मुझे दिल से सुना ही नहीं है।

तुम मुझे संन्यास की याद दिलाते हो जैसा कि अर्जुन ने भी किया था। परन्तु परमात्मा का पाना कोई कर्मों से भाग जाना नहीं है, परन्तु ये मरने वाली मैं (small i) के बन्धन से जीवन और कर्मों की आज़ादी है।

The lord comes in the world. Because His **bhagats** are there. Therefore **bhagats** should not renounce the world. You live in the world but not of the world. Perform all actions, but renounce the desire for fruit. Such work is worship. This is called **Nishkaam Karma**.

"God to you will never speak
If for Him you never seek
If you see no lonely view
As your pathway you pursue
It is because you choose away
That is gloomy flat grey.
Our world we build, our lives we make
By the attitude we take
If blind, better and depressed
How can we hope to see the best.

Light is not found in written books or spoken words. One has to look within normal life is full of reversals, contradictions, zig-zags and changing problems, please realise it.

Just as every dog must have its fleas, so all of us from time to time are entitled to occasional headaches, irritability, panic, anxiety, fatigue and all other routine adversities of life. We all need greater tolerance, much trust, less suspicion, less hate, less fear.

The delusion of the creation is destroyed only in the company of the **Guru**. Who is feeling himself nothing less than the creator. He is the perfect man who obtains release from birth and death.

भगवान इस जगत में इसलिए आते हैं क्योंकि उसके भक्त वहाँ बैठे हैं। इसलिए भक्त को संसार का त्याग नहीं करना चाहिए। तुम्हें जगत में रहना है, पर जगत का बनकर नहीं। सब कर्म करो पर फल की इच्छा का त्याग करो। ऐसा कर्म ही पूजा है। यही निष्काम कर्म कहलाता है।

भगवान तुमसे कभी बोलेंगे नहीं
उसके लिए जब तक तुम चाहोगे नहीं
सुंदर दृश्य जो तुम्हें दिखा नहीं
अपने रास्ते पर उद्देश्य से चलते
वो इसलिए क्योंकि तुमने है जो चुने
वो है अस्पष्ट? नीरस और काले
अपना जगत हम बनाते है, अपना जीवन निर्माण करते हैं
उस दृष्टि से जैसे हम रखते हैं
अगर वही यदि, अंधा, कड़वा या मायूस हो
तो सर्वोच्च देखने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं।

प्रकाश कभी लिखित पुस्तकों या बोले गये शब्दों से नहीं मिल सकता। पर व्यक्ति को अंदर की यात्रा करनी पड़ेगी। साधारण जिंदगी में विपरीत परिस्थितियाँ, मतभेद, टेढ़ी-मेढ़ी और बदलती समस्याएं भरी पड़ी हैं।

जैसे हर श्वान को अपने ही कीड़े लगे रहते है, वैसे ही समय-समय पर हम सब अक्सर सिर-दर्द, चिड़-चिड़ापन, त्रास, चिंता, थकान और अन्य क्रमिक अभाग्य के अधिकारी हो जाते हैं। हम सबको और ज्यादा सहनशील, ज्यादा विश्वासी, कम शक्की, कम नफरतवाला, कम डरनेवाला होना चाहिए।

यह जगत का भ्रम केवल गुरु के संग से नष्ट हो सकता है। ऐसा गुरु जो खुद को उस सृष्टि के रचयिता से जरा भी कम नहीं समझता है वही परिपूर्ण मनुष्य है जिसने जन्म और मरण से छुटकारा पाया है।

There must be action where there is body. Not one embodied being is exempted from work. Then the question arises how can one be a source of action and still be free from its results i.e. good, bad or indifferent. 'Yes' Lord Krishna replied, "By desireless acting, by dedicating all activities to God and by surrendering oneself to Him body and soul. There is no need to **sanyas**. He who gives up action falls, but he who acts but gives up the reward rises.

According to **Gita** - "All actions should be performed without attachment and devoid of the sense of doership. When there is no desire for fruit there will never be temptation for untruth. Desire for fruit is the only universal prohibition.

Geeta 2nd chapter, 47th **Sloka**. To action alone thou hast the right. But never to fruits thereof. Be thous never motivated by fruits of action, nor be thou attached to inaction. This inaction is **Sanyas**. He who renounces all desires, moves about without attachment, desire, without the sense of 'I' and 'Mine' he attains to peace. This is the Divine state. He attains to the bliss of God. Dreams can have no significance. You are quite right there. This world is also a dream, only a longer dream of about 100 years. But when we know the creator of this creation, then alone we attain bliss in this world right now.

"Know thyself and you know that you are God."

(Christ)

जहाँ तन है वहाँ तो कर्म होना ही चाहिए। देह में आये किसी भी प्राणी को कर्मों से छूट नहीं दी गयी है। अब प्रश्न यह उठता है कि कर्म करते हुए कोई अपने को उन कर्मों के फलों से कैसे बचा सकता है? जैसे अच्छा, बुरा या समानता वाले कर्म। कृष्ण भगवान ने उत्तर दिया–'हाँ' निष्काम कर्मयोग से जब हम अपने सारे कर्म परमात्मा पर समर्पित करते हैं, अपना आप, अपना शरीर, अपनी आत्मा को उस पर समर्पित करते हैं, तब हम सब कर्म करते हुए भी हर कर्म के फलों से बच सकते हैं। कर्म करत होए निःकर्मी। संन्यास की कोई आवश्यकता नहीं है। जो कर्मों से भागता है या त्याग करता है वो गिर जाता है पर जो कर्म करते हुए उसके फल का त्याग करता है वो ऊपर की ओर चढ़ जाता है।

गीता के अनुसार सभी कर्म निरासक्त और अकर्ता भाव से किये जाने चाहिए। जहाँ फल की इच्छा नहीं रहती, वहाँ असत्य का प्रलोभन भी नहीं रहता। फल की इच्छा ही दुनिया की सबसे बड़ी रुकावट है। केवल निरीच्छापने की आवश्यकता है।

गीता के दूसरे अध्याय के 47 वे श्लोक में लिखा है–तुम्हें कर्म करने का अधिकार है पर फल पर नहीं। इसलिए कर्म के फलों से प्रभावित मत होना और ना ही अकर्मण्य होकर बैठ जाना। यह अकर्मण्यता ही संन्यास है। जो सर्व कामनाओं का त्यागी है और जो निरासक्त और निरीच्छा होकर, मैं और मेरे के भाव से रहित होकर चलता है वही परम आनंद को पाता है। यही उसकी दिव्य अवस्था है। वो परमात्मा के आनंद को प्राप्त होता है। सपनों का कोई महत्व नहीं है। तुम भी अभी वहीं खड़े हो। ये जगत भी एक सपना है, बस ज्यादा लम्बा सपना जो करीब 100 साल का है। पर केवल जब हम इस सृष्टि के रचयिता को जानेंगे, तब अभी के अभी हमको आनंद की प्राप्ति होगी।

अपने को पहचानो और जानोगे कि मैं ही वो भगवान हूँ। (क्राईस्ट)

Letter No. (4)

There is no question of deserving or not deserving to be called 'blessed self' when I see absolute existence of God which is the only truth. I see nothing but God. Everything is God and God is everywhere. I am that **Om**. **Hari Om**. I see myself everywhere. One in all and all in one. **Nanak** (**Nana Ek + Na Anek**) i.e. one in all but not many. Unless you feel all you know not all. You can not know unless you love i.e. when you begin to feel that everything is you, you are **Atma** and everything is **Atma**, then you see and feel nothing but **Atma**, then you know all as **Atma**. This can only be done by love. Oneness, absolute without a second should be comprehended as pervading everywhere. The Lord by means of magic causes all things to whirl round mounted as it were, on a circular engine. Unless you master your mind, i.e. thoughts, you cannot enjoy bliss, peace. Dis-identify yourself with body and see God everywhere. Such is called equal seeing. Unless regard for body is lost, there is no God. Ignorance of the self is the source of all trouble. Know thyself and you know God.

पत्र संख्या (4)

स्वयम् को आत्मस्वरूप मानने में योग्य या अयोग्य होने का सवाल ही नहीं उठता जब मुझे परमात्मा का सम्पूर्ण अस्तित्व दिख रहा है जो कि एकमात्र सच है। मुझे अब भगवान के अलावा कुछ नजर नहीं आता। हर वस्तु भगवान है और भगवान हर जगह है। मैं ही वो ओम् हूँ हरि ओम्। मैं हर जगह स्वयम् को ही देखता हूँ। एक सबमें है और सब एक में हैं। नानक यानि नाना + एक या ना + अनेक यानि अनेक में एक पर अनेक नहीं। जब तक तुम सब में स्वयम् को नहीं देखोगे, तब तक तुम सब को नहीं जान पाओगे। तुम तब तक नहीं जान सकोगे जब तक तुम प्रेम नहीं करोगे यानि कि जब तुम ऐसा भाव रखने लगोगे कि हर जगह तुम ही हो, तुम आत्मा हो और सब कुछ आत्मा है, तब तुम्हें एक आत्मा के अलावा कुछ नहीं दिखेगा या सूझेगा, तब तुम सबको आत्मा करके ही जानोगे। ये केवल प्रेम, एकता, परिपूर्ण बिना किसी दूसरे के, से ही किया जा सकता है। जब तक उसे सर्वव्यापक में सम्मिलित किया जाये। परमात्मा अपनी जादुई शक्ति से सभी वस्तुओं को अपने चारों ओर इस प्रकार घुमाता है जैसे कोई इंजन अपने पीछे लगे डिब्बों को गोल चक्कर में घुमाता है। जब तक तुम अपने मन इन्द्रियों पर काबू नहीं पाओगे तक तक तुम आनंद, शान्ति का लाभ नहीं उठा सकोगे। अपने को शरीर से जुदा कर जानो और हर जगह भगवान को देखो, इसे सम दृष्टि कहते है। जब तक देह की सुध नहीं गवाओगे, भगवान नहीं मिलेगा। स्वयम् को न जानने की वजह से ही सारे दुख-परेशानियाँ हैं। स्वयम् को जानो तो भगवान को भी जान जाओगे।

Letter No. (5)

I see you as myself and you address me as my **Dada**, which is duality. I am firm in sameness and oneness with you as well as the whole world. There is only God and nothing but God. Realise that please. See God in everything and everywhere. One God **Nirakar** became many. Many is **Sakar Maya**.

You are all the time **Atma**. No foes, no fear, no danger. 'None can touch thee. O eternal one self in body is called **Atma** and in universe is **Parmatma**. Oneness absolute without a second should be comprehended as pervading everywhere. Unless regard for the body is lost, there is no God. First forget yourself (body) then you will see God everywhere. Know thyself and you know God. Ignorance of the self is the source of all troubles and the knowledge of that is that of undecaying bliss. Love all alike, then all desire fall of. To love anyone personally is bondage. Reach unity and no more duality will come. Live in the realisation and recognition of your oneness with me. As you know me as I am, so shall you become.

पत्र संख्या (5)

मैं तुम्हें अपना आप करके देखता हूँ और तुम मुझे अपना दादा कह कर सम्बोधित करते हो। जो कि द्वैत है। मैं तुमसे और सारे संसार के साथ एकता और समता भाव में दृढ़ हूँ। है ही केवल भगवान और भगवान के सिवाय कुछ नहीं। कृपया इसे समझो, अनुभव करो। भगवान को हर जगह और हर वस्तु में देखो। एक निराकार अनेक बनकर आया है। और जो अनेक दिख रहे है - ये है साकार माया।

तुम हर समय, तीनों कालों में हो ही आत्मा। ना कोई दुश्मन, ना कोई भय ना कोई खतरा। तुम्हें कुछ भी नहीं छू सकता। वो नित्य स्वरूप शरीर में आत्मा कहलाता है और ब्रह्माण्ड में परमात्मा। परिपूर्ण अद्वैत, दूजा रहित को हर जगह सम्मिलित करो जैसे वो सर्वव्यापक है। जब तक देह का भाव नहीं जाएगा तब तक भगवान नहीं मिलेगा। पहले अपने को भुलाओ (शरीर-देहभाव को), फिर तुम्हें परमात्मा सर्वत्र दिखाई देगा। खुद को जानोगे तो खुद खुदा हो जाओगे। अपने स्वरूप को न जानना ही सब दुखों का कारण है और स्वरूप का ज्ञान होना कभी न क्षय होने वाले आनन्द को जन्म देता है। सबको समान रूप से प्रेम करो इससे सभी इच्छाओं का अंत होगा। किसी एक को भी व्यक्तिगत तौर पर प्यार करना बन्धन है। एकता में आजाओगे तो द्वैत नहीं आएगा। तुम्हारे और मेरे में जो एकता है उसे अहसास करो और उसकी मान्यता में जीवन व्यापन करो। जैसे-जैसे तुम मुझे जानोगे जैसा मैं हूँ, वैसे ही तुम बनते जाओगे।

Modern world knows only body, but nothing about **Atma**. Reality is one but manifestations are diversified.

See unity in variety. One is the basis and many are the expressions of that one.

I am one, I wish to be many. I manifested myself in many forms. There is art, even if the artist is not seen.

The divine manifestations are so many different mirrors, but which is reflected in the mirrors is one Sun. In God as in Sun there is no past, future, present, today, tomorrow or yesterday. In the Sun, there is no morning, noon or evening.

I was a hidden treasure and I love to be known. Therefore I created the creation in order to be known

The fact of salvation is self-identification with God. What is my immortality. I have no appetite for a separate immortality. To find God is the beginning of wisdom. Because then we learn his purpose with us and to live our lives with him.

Finding of God is the beginning of service. It is not an escape from action, but it is release of life and action from the prison of the mortal self. Feel the need of God first. Then form an acceptable idea of God, that is turning the face to east to see the sun coming.

आधुनिक दुनिया केवल देह के विषय में जानती है पर आत्मा के विषय में कुछ नहीं। सच्चाई केवल एक है पर जो प्रकट है वो भिन्न-भिन्न है।

विभिन्नता में एकता देखो। एक ही भूल है और उस एक की अनेक आकृत्तियाँ हैं।

मैं एक हूँ मैं अनेक होना चाहता हूँ। मैंने अपने को अनेकों आकारों में प्रकट किया है। यहाँ कला है हालांकि कलाकार दिख नहीं रहा है।

भगवान इतने भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट हुआ है पर जो इन विभिन्न आईनों में जो प्रतिबिम्ब है वो केवल एक ही सूर्य है। भगवान में भी सूर्य की तरह कोई अतीत, भविष्य, वर्तमान, आज, आनेवाला कल या गुजरा दिन नहीं है। सूर्य में कोई सुबह, दोपहर या शाम नहीं है।

'मैं' एक छिपा हुआ खजाना था और मैं जानने योग्य बनना चाहता था। इसलिए मैंने जानने के लिए सारी सृष्टि की रचना की।

मुक्ति का रहस्य इस बात में है कि हम स्वयम् को भगवान कर जाने। मेरा जो कुछ भगवान के साथ मेल खाता है वो भगवान है। मेरी अमरता भगवान है। मुझे और अलग से अमरता की कोई भूख नहीं है।

भगवान की खोज ही ज्ञान की शुरुआत है क्योंकि तभी हमें उसका हमारे से उद्देश्य का पता चलता है और कैसे हम उसके साथ अपना जीवन जीएं। भगवान का पाना सेवा करने की शुरुआत है। ये कर्मों से भागना नहीं है पर ये विनाशी मैं की कैद से जीवन और कर्मों की आजादी है। पहले भगवान की जरूरत को महसूस करो, फिर उसे स्वीकार करने का विचार बनाना। यानि कि सूर्य को आता देखने के लिए अपने को पूर्व की ओर मुंह घुमाना।

Everything is there as it was before, only now it is now aflame. Suddenly the light fills ones eyes and one knows that God is risen and that doubt is fled forever. Fear is the sign of want of faith. When you have faith in God, you cannot fear.

Neither seek nor try to avoid but take what comes. That is **Bhagti**. People think that **Bhagti** is instrument to fulfil their desires. What a difference! Ignorance is the cause of crimes and sorrow when the cause is unknown the effects mislead us. The knowledge of the self is the real knowledge. What I am - **Om**. i.e. I am that. Content with what comes to him, without effort. Though acting, he is not bound. This is salvation. Superior to all is He who offers unto me all his activities, then consequences and his body and thus nothing between himself and **parmatma**.

He is equal seeing and devoid of the sense of doership.

The universe is ours to enjoy. But want nothing. To want is weakness. Wants makes us beggar. Never-never feel that you want anything. This is true knowledge that liberates.

सब कुछ वैसे ही है जैसे पहले था, बस केवल यह प्रकाशित हो गया है। अचानक जब आंखो में ज्योति आती है तो जान पड़ता है कि भगवान (सूर्य) निकल आया है और सारे भ्रम हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं। डर विश्वास की कमी की निशानी है। जब तुम्हें भगवान पर भरोसा है तो तुम्हें डर नहीं लगेगा।

ना कुछ चाहो ना किसी से बचने का प्रयास करो तो ये ही भक्ति है। लोग सोचते हैं भक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने का एक साधन है हालांकि वे स्वयं कहते हैं कि प्रभु आपकी ही मर्जी चलेगी।

कितना बड़ा अन्तर है? अज्ञान ही पाप और दुखों का मूल कारण है। जब तक कारण का पता ही नहीं, तब तक उसके फल हमें बहकाते रहते हें। अपने स्वरूप का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। मैं क्या हूँ – ओम् यानि कि मैं वो (भगवान) हूँ। उस पर जो बन आता है उसे सहज में बिना यत्न के संतुष्ट हो जाओ। कार्य करते हुए भी वो बन्धन में नहीं है। यही मुक्ति हे। सबमें श्रेष्ठ तो वो हे जो मुझ पर अपने सारे कर्म भेंट करता है, फिर उनके फल और अपना शरीर फिर उसके और परमात्मा के मध्य कुछ भी शेष नहीं देखता।

वो समदृष्टि वाला है और कर्तापने के भाव से मुक्त हे। सारी सृष्टि हमारी मौज के लिए है, लेकिन कुछ नहीं मांगती/चाहती। चाह करना ही कमजोरी है। चाहनाएं हमको भिखारी बना देती हैं। और हम भगवान हैं, राजा हैं, भिखारी नहीं। कभी भी ऐसा महसूस नहीं करना कि तुमको कुछ चाहिए। यही सच्चा ज्ञान है जो मुक्ति दिलाता है।

Letter No. (6)

First there was 'word' i.e. **Nirakar**. It expanded to become the 'world' i.e. the visible world. Lord is hidden in the world but in a scattered form. It is not straight so that all can recognise it. This is also the wish of God to keep Himself hidden. That is why we should not try to look for the **Nirakar** because it is formless and shapeless and is not ought to be seen. Though unknowable he has taken a visible form in the world. The **Sakar** Krishna was **Nirakar** who come in this world as **Sakar** Arjuna and Udhava. Recognised Him because it is not that easy to distinguish him. Similarly **Sakar** God is present all the time, even at present. If you know the **Guru** of the new era as a human being, You get the birth of a dog for many lives. **Guru** is God, **Guru** is a **Gorakh-Brahma**, **Guru** is God **Nirakar** who has come in a **Sakar** form. That is why it is the duty of everyone to recognise **Guru**. He is God only in feet of whose your happiness lies. A glance of a true **Guru** gives the remembrance of God. You get bliss - from him on you have faith. One who have faith can gain knowledge. No one can give knowledge and bliss but you have the right to have it. Bliss can only be achieved when we know ourselves as **Atma** and '**Brahma**'.

Strength is life, weakness is death, everything will come to you if you only have faith. I was a hidden treasure and I loved to be known there. I created the creation to be known.

पत्र संख्या (6)

पहले word था अर्थात निराकार। उससे बढ़कर बड़ा हुआ world याने कि साकार जगत। इस जगत में Lord छिपा है (world) यह Lord आगे पीछे आता है। इसलिए सीधा नहीं है जो सबको पहचान में आवे। ये भी ईश्वर इच्छा ही है कि मैं छिपा रहूँ। इसलिए हमें निराकार को देखने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि निराकार का रूप रंग और रेखा नहीं हे। इसलिए वह दिखाई देने वाला नहीं है। unknowable पर निराकार ने साकार रूप जगत में धारण किया है। वो साकार कृष्ण था जो निराकार, जगत में साकार होकर प्रकट हुआ उसको अर्जुन और उधव ने पहचाना क्योंकि सबके लिए भगवान पहचानना सरल नहीं है। ऐसे हर समय साकार भगवान उपस्थित है - अभी भी है। New Era Guru को मानुष जानते जन्म-जन्म होये श्वान। गुरु ईश्वर, गुरु गोरख ब्रह्म, गुरु पार्वती माई अर्थात गुरु मायापति हैं। गुरु है भगवान जो निराकार से साकार में आये हैं इस गुरु को पहचानना सबका धर्म है। वो ही है खुदा जिसमें तेरी खुशी हो। दर्शन साधु का तो साहब आवे याद। आपको जिसमें विश्वास हो उससे आनंद भी आयेगा। श्रद्धावान लभते ज्ञानम। ज्ञान और आनंद कोई देने वाला नहीं है लेकिन तुझे लेने का अधिकार है। आनंद अपने को आत्मा और ब्रह्म समझने से ही आएगा।

शक्ति जीवन है, कमजोरी मौत है। सब कुछ तुम्हारे पास आ जाएगा यदि तुम्हारे में विश्वास मात्र है। मैं वो छिपा हुआ खजाना था और मुझे जाने जाने का शौक था। मैंने सृष्टि की रचना ही की ताकि मैं जाना जा सकूँ।

We have considered ourselves as a being or body. This false impression has to be corrected. **Guru** gives us this vision. In reality it is **Atma**. When it got a form of a body, it forgot himself in its **Maya**. The **Nirakar Guru** has come in the **Sakar** form, to the **Sakar** disciple that he is that **Brahma**.

The mistaking of the body for the self is called **Maya**. This **Maya** is responsible for the creation of **Sansara**.

This determination can be achieved by '**Sumirana**' (remembrance) alone. The world does not understand what '**Sumiran**' means. Self farewell to ego. When mind and body becomes one, that is called '**Sumiran**'. While chanting Ram, only Ram remains. And ego is gone.

A being cannot do anything by himself. For that he requires the company of a **Guru**. Without **Guru** and knowledge salvation is not possible.

First is God. His image is universe. God descends and assumes manhood as man ascends and attains Godhood.

- Duality is the product of ignorance. Attain oneness and sameness.
- The knowledge of the rope removes the delusion regarding the snake.
- First let us be God and then help others to be God.

हम अपने को जीव शरीर मानकर बैठे हैं, यह भूल सुधारनी है। गुरु से यह समझ मिलती है। वास्तव में है आत्मा, इसे शरीर मिला तो माया में भूल गया था। जो गुरु निराकार से साकार में आये हैं वो साकार शिष्य को फिर निराकार का निश्चय कराते है कि तू ब्रह्म है।

स्वयं को शरीर मानने की भूल को ही माया कहते हैं। यही माया सारी सृष्टि की सृजना का कारण है।

यह निश्चय सिमरन से ही होता हे। दुनियाँ सुमिरन का अर्थ नहीं समझती। सुमिरन का अर्थ है आप विसर्जन। तन मन एक रस होए तो सुमिरन कहिये सोय। राम जपत राम ही रहिया, आप विसर्जन होय।।

"प्रभु की सिमरण साध के संग।
उपजै चाह साध के संग।।"

जीव अकेला कुछ नहीं कर सकता, परन्तु उसे गुरु की आवश्यकता पड़ती है। गुरु और ज्ञान के सिवाय मुक्ति नहीं है।

पहले ब्रह्म है। ब्रह्माण्ड उसकी परछाई है।

भगवान अपने पद से नीचे उतरकर मनुष्य बनता है ठीक वैसे ही जैसे मनुष्य अपने पद से चढ़ कर भगवानपने को प्राप्त होता है।

- द्वैत अज्ञान की ही उपज है। अद्वैत और समानता को प्राप्त करो।
- रस्सी का ज्ञान होना साँप के भ्रम को दूर कर देता है।
- पहले खुद भगवान हो जाओ, फिर दूसरों को भगवान होने मे सहायक बनो।

- Man's real nature is clouded by his ego being God, They deny their Godhood.
- Guru in need is God in disguise.
- The highest fulfilment is to see him in all and all in Him.
- A painting is a description of it, both are unreal. Same is the universe.
- **Atma** is **Brahma** and I am **Atma**. Knowledge like this takes off all errors. The knowledge of the self is real knowledge. One may rule over the whole world. Yet he cannot attain peace, unless he knows the self. Ignorance of the self is the source of all troubles and the knowledge of it is that of undecaying bliss and peace.
- Bliss is in God, not in world. First know thyself that you are God. Realize yourself.

- मनुष्य का सच्चा स्वरूप उसके अहंकार से ढका रहता है इसलिए वे भगवानपने से इंकार करते हैं।
- जरूरत के समय गुरु ही वो भगवान है जो वेश बदल कर आया है।
- सबसे बड़ी उपलब्धि भगवान को हर एक में देखने में है और सब उस ही में है।
- चित्रलेखन उसकी व्याख्या है पर दोनों ही असत्य है वैसे ही ये जगत।
- आत्मा ब्रह्म है और मैं आत्मा हूँ। ऐसा ज्ञान हर भूल को हटा देता है। स्वयं का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। सकल सृष्टि के राजा को भी तब तक आनंद और शान्ति नहीं मिलेगी जब वह स्वयं को नहीं जानेगा। स्वयम् को न जानना ही सर्व दुखों का मूल कारण है और स्वयम का ज्ञान कभी न खुटने वाले आनंद और शान्ति को जन्म देता है।
- आनंद परमात्मा में है जगत में नहीं। पहले स्वयम को जानो कि मैं वो भगवान हूँ।

Letter No. (7)

'Render unto ceasor, the things that are ceasors and to God the things that are god's, said Christ i.e. obey God and the incarnations and spiritual. First and Secondly Just kings and rulers. Rulers and kings punished like Christ, Mahatma Gandhi, etc. and set free the evil doers. **Atmakar** is not bound by legal sanctions. Indian Government and Sri Lankan Government of yours are very small, but I am the creator of the whole creation. Your country is India, and Pakistan is your enemy, But my country is the whole universe. Where am I not? No foes. No danger, no fear can touch thee o eternal one (**Atma**) not body. Many times you write I as Tandon think thus I have told you that if you take yourself to be Tandon, you are **Atmaghati**. First understand that you are not and thus see the absolute existence of God.

पत्र संख्या (7)

भाग करो और फिर जो राजा का है उसे राजा को दे दो और जो भगवान का है वो उसे दे दो (क्राईस्ट) यानि पहले भगवान की अवतारों की और संतों की मानो फिर न्यायी राजाओं और शासकों की। शासकों और राजाओं ने ईशु को सूली पर चढ़ाया, महात्मा गान्धी को सजा दी आदि जबकि पाप-गुनाह करने वालों को आजाद छोड़ दिया। आत्माकार किसी भी धर्म या कानून के बन्धन में नहीं है। तुम्हारी भारत सरकार और श्रीलंकन सरकार बहुत ही छोटी है, पर मैं सारी सृष्टि की रचनाकार हूँ। भारत तुम्हारा देश है और पाकिस्तान तुम्हारा दुश्मन पर मेरा देश ये सारी सृष्टि है। मैं कहां नहीं हूँ? आत्मा को कुछ भी नहीं छू सकता - ना दुश्मन, ना खतरा, ना कोई डर। कई बार तुम मैं को टंडन लिखकर सम्बोधित करते हो जैसे टंडन सोच रहा है इसलिये मैं तुमको कह देता हूँ कि यदि तुम स्वयं को टंडन जानते हो, तो तुम आत्मघाती हो। पहले समझ लो कि तुम हो ही नहीं, तब तुमको भगवान का सम्पूर्ण अस्तित्व नजर आयेगा।

Letter No. (8)

I am **Atma** i.e. **Parmatma**, this is self realisation. I am that. Know thyself and you know God. Yourself is God (Om). All things are God. God himself is all in all. Everything is God. God is everything himself.

- Whatever is seen is all God. You say But see not.
- One God hath extended himself everywhere in various ways in endless waves.
- God himself performeth and beholdeth his own play.
- God is one and manifold. God is the seed and God is the tree.
- God is himself far and himself near.
- One in all and all in one. See nothing but God.
- God is everywhere and where is he not?

  That self is myself and verity whoever has this trust for him, there is no uncertainty.
- Where one sees nothing else, understands nothing else, that is infinite.
- Light is not found in written books or spoken world, one has to look within.
- Our lives we make by the attitude we take if blind bitter and depressed, How can we hope to see the best.

पत्र संख्या (8)

मैं आत्मा हूँ यानि परमात्मा, यही आत्म साक्षात्कार है। मैं वो हूँ। स्वयं को जानो, तब तुम्हें भगवान का भी पता चल जायेगा। तुम स्वयम भगवान हो। हर वस्तु भगवान है। भगवान अपने आप में पूर्णपूर है (सर्वस्व है)। सब कुछ भगवान है। भगवान अपने आप में ही सब कुछ है।

- जो भी दिख रहा है वो सब भगवान है। तुम कहते हो पर देखते नहीं हो।
- भगवान ने हर जगह अपना विस्तार किया है विभिन्न रूपों में अखुट लहरों में।
- भगवान स्वयम अपना खेल खेलता भी है और रोक भी देता है।
- भगवान एक है और अनेक रुपों में है। वही बीज भी है और वृक्ष भी वही है।
- भगवान स्वयम दूर भी है और स्वयम पास भी।
- एक सबमें और सब एक में। भगवान के अलावा कुछ मत देखो।
- भगवान सर्वस्व है और वो कहाँ नहीं है?

  "तू व्यापक डाली डाली है, कोई जगह न तुझ से खाली है।" और वो भगवान मैं स्वयं हूँ और सच्चाई से जिस किसी को भी अपने पर यह विश्वास है, उसे अनिश्चय का कोई कारण नहीं है।
- जहाँ एक को कुछ और नहीं दिखता, कुछ और समझ नहीं आता वही अनंत है।
- ज्ञान लिखी हुई किताबों में या शब्दों की दुनिया में नहीं मिलता पर एक को अपने अन्तर में झांकना पड़ेगा, खोजना पड़ेगा।
- अपनी जिंदगी हम वैसी ही बनाते हैं जैसे दृष्टिकोण से उसे लेते हैं। यदि अज्ञानपूर्ण, कठोर और निराश होते हैं तो हम सबसे अच्छा देखने की कल्पना कैसे कर सकते हैं।

- Fear is the sign of want of faith. Believers of God are fearless.
- Life of faithful and death of faithless.
- Self mastery is essential for self realisation.
- Modern world knows only body, but nothing about **Atma**.
- If only mind is kept under control nothing matters it, where one may happen to be. The true word is God - consciousness if you can sustain it, then in busy Newyork or silent **Himalayas**. The effect remains the same.

While we recognize God it is really only the self from which we have separated ourselves and worship as outside of us. But it is our true self all the time, the one and only God. You are the truth from the very beginning only realize yourself.

- Life is eternal. There is no death. Body perishes at death.
- I am **Atma** and the world is not.
- The world is like mirage and dreamland.
- They say that God is everywhere and at the same time, they cry for God because they have not seen Him.
- Love all alike, then all desires fall off. To love anyone personally is bondage.
- The root of all suffering is cut off by the vision of the self.
- Unless regard for the body is lost, there is no God.

डर विश्वास की कमी की निशानी है। भगवान पर विश्वासी निर्भय होते हैं।

- विश्वासी का जीवन और अंधविश्वासी का मरण
- आत्म साक्षात्कार के लिए स्वयं पर विजय पाना जरूरी है।
- आधुनिक दुनिया केवल शरीर के विषय में जानती है पर आत्मा का कुछ नहीं जानती।
- केवल अपने मन में स्थिरता हो तो कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहीं पर भी हों। सच्चा जाप है भगवानपने का एहसास। यदि तुम इसे कायम रखते हो तो चाहे तुम बस्ती में हो चाहे गुफाओं और कंद्राओं में हो (शांत हिमालय में) उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

जब हम भगवान को पहचानते हैं तब हम देखते हैं कि वास्तव में वो अपना ही स्वरूप है जिससे हम बिछड़ गये थे और उसे बाहर से पूज रहे थे। पर वो हमेशा से ही हमारा सत् स्वरूप है एक है, केवल है ही भगवान (ब्रह्म)। तुम आदि से वो सच स्वरूप हो, केवल अपने को पहचानो।

- जीवन शाश्वत है। मौत बनी ही नहीं है। मृत्यु पर केवल शरीर का क्षय होता है।
- मैं आत्म स्वरूप हूँ और जगत बना ही नहीं है।
- संसार मृगतृष्णा के जल समान है और स्वपनवत् है।
- लोग कहते हैं कि भगवान सर्वत्र है और वो उसे पुकारते भी रहते हैं क्यों उसे उन्होंने कभी देखा ही नहीं है।
- सबको समभाव से प्रेम करो तो सारी इच्छाएं खत्म हो जायेगी। किसी एक को भी व्यक्तिगत तौर पर प्यार करना बन्धन है।
- अपने स्वरूप के दर्शन से सभी दुखों का समूल नाश हो जाता है।
- जब तक देहअध्यास नहीं जायेगा, भगवान नहीं मिलेगा।

Letter No. (9)

1. An **Atmakar** moving among sense objects with senses free from attraction and repulsion (**Rag-Dwesh**) mastered by self goeth to peace.
2. Self in body is called **Atma** and in universe is **Parmatma**.
3. Disidentify yourself with body. Controlled thought and mind show unity of **Brahma** everywhere.
4. **Vasudeva** is all. Such is called equal seeing.
5. Superior to all is he who offers unto me all his activities, their consequences and his body and thus sees nothing between himself and **Parmatma**. He is equal seeing and devoid of the sense of doership. I do not see anyone higher than he who has resigned his body and self unto me.

Reach unity and no more duality will come. Those who have attained sameness are said to be living in God. To rise to this is to be perfect. But the more perfect you are, the less work can you do. Then you see and know all is child play and do not trouble yourself about anything.

Physical body is composed of five elements and will be decomposed. Individual reality is like sun, like teacher who teaches but does not require learning. Whoever comes to learn is like moon. Moon gets light from sun.

पत्र संख्या (9)

1. आत्माकार विषयों में विचरण करता हुआ, अपनी इन्द्रियों पर संयम रखकर राग द्वेष से मुक्त रहता है और आनंद-शान्ति को प्राप्त होता है।
2. वो निज स्वरूप जब देह में है तो आत्मा कहलाती है और ब्रह्माण्ड में परमात्मा।
3. अपने को शरीर से अलग कर जानो। ख्यालों ओर मन की स्थिरता से हर जगह ब्रह्म दिखने में आता है। वासुदेव सर्वे। यही समत्व योग भी है।
4. सर्व में श्रेष्ठ वही है जो मुझ परमात्मा पर अपना शरीर सहित सारे कर्म और उनके परिणाम को समर्पित कर देता है और जो अपने और परमात्मा के मध्य कुछ और नहीं देखता। वही समदृष्टता भी है और कर्त्तापने के भाव से परे भी है। बड़े से बड़ा वही है जिसने अपने देह और जीवभाव को मुझ परमात्मा पर समर्पित कर दिया है।

जीव और ब्रह्म की एकता हो जाने से द्वैत का समूल नाश हो जाता है (एकोब्रह्म द्वित्या नास्ति)। जिन्होंने समत्व भाव को पा लिया वहीं ब्रह्मभाव में रह रहे हैं। इस पद को पाने के लिए तुम्हें पूर्ण होना पड़ेगा। तुम जितना-जितना पूर्ण होते जाओगे, उतने ही तुमसे कर्म कम बनेंगे। तब तुम्हें ऐसा ज्ञात होगा कि ये सब एक खेल चल रहा है और हम केवल एक दृष्टा हैं और फिर किसी भी हालत में हम परेशान नहीं होंगे।

शरीर पाँच तत्वों का बना है, उसी में विलीन हो जायेगा। पर जीव की सच्चाई सूर्य की तरह है जैसे एक अध्यापक को पढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती। जो पढ़ने आता है वो चन्द्रमा की तरह है। चन्द्रमा को प्रकाश सूर्य से मिलता है।

One is **Nirbal**, the other is **Balwan**. **Nirbal** can get **Bal** (strength) from **Balwan**.

- Whenever the spiritual life of men has become degenerate and thus their morals corrupt, the prophet makes his appearance bearer of a divine message.
- As rain comes down and returns not but waters the earth that it may give bread to the eater, so shall my word be that goes out of my mouth. It shall accomplish what I please and it shall prosper in whom I sent it. He has to put the mirror exactly against the sun to get the sun in the mirror. Attachment to the lantern is not loving the light. If thou loved me, turn away from thyself and if thou seekest my pleasure regard not thine own that thou mayest die in me and I may eternally live in thee. Seize thy chance, it will come no more.

Feel the need of God first, then form an acceptable idea of God that is as if turning your face to the east, to see the sun coming. Everything is there as it was before only now it is aflame. Suddenly the light fills one's eyes and one knows that God has risen and that doubt has fled forever.

एक है निर्बल, दूजा है बलवान बड़ा। निर्बल शरीर को शक्ति बलवान आत्मा से मिलती है।

- जब-जब मनुष्य आत्म पद से नीचे गिरता है और उसका धर्म नष्ट होने लगता है तब-तब भगवान ने एक नया अवतार (पैगम्बर) का रूप धारण किया है।
- मेरे मुख से निकले हुए शब्द उस वर्षा की तरह होंगे जो एक बार धरती पर आने के बाद वापस नहीं जाते। अपितु इस तरह बरसती है कि भूखों को उनका आहार मिल सके। मेरे वचन वह कार्य पूरा करेंगे जो मैं करना चाहता हूँ और उन सबके जीवन को खुशहाल कर देंगे जिन पर ये बरसेंगे। यदि हम सूर्य को एक आइने में उतारना चाहते हैं तो हमें आईने को सूर्य के ठीक सामने लेकर जाना पड़ेगा। लालटेन से आसक्ति का अर्थ प्रकाश से प्यार नहीं (देह की आसक्ति और आत्मा का भाव दो अलग बातें हैं) यदि तुम मुझ आत्मा से प्रेम करते हो तो अपने जीव भाव से परे हो जाओ और यदि तुम मेरी खुशी, मर्जी जानना चाहते हो तब अपनी चलाना बंद कर दो। अपने अहम को मेरे चरणों में समर्पित कर दो तो मैं सदा ही तुम्हारे साथ हूँ।

यदि एक बार यह मौका खोते हो तो दोबारा कभी नहीं मिलेगा।

पहले भगवान की जरूरत को महसूस करो, फिर उसे प्राप्त करने का विचार पैदा होगा। जैसे सूर्य को उगता देखने के लिए पूर्व दिशा की ओर मुँह करके खड़े होते हैं। सूर्य आने से जो चीज जैसे थी, वैसे ही रहती है पर प्रकाशित हो जाती है। अचानक जब ज्ञान की ज्योति (दृष्टि) मिलती है और जब भगवान का भाव उभर आता है तब सारे संशय भ्रम हमेशा के लिए निवृत हो जाते हैं।

All actions end in knowledge. **Atmakar** does not engage himself in actions who has experienced the absolute (**Nirakar**). Bliss is unattainable by **Karma** as it is not included in the scheme of creation.

Every action has reaction. All actions are bondage, no salvation. All **Karmas** have defect as smoke in firewood (Gita)

The Lord of all things dwells in the region of the heart. By means of His magic, God causes all things to whirl round, mounted as it were on a circular engine.

- Neither seek nor avoid, take what comes. **Niricha**, desireless. Want makes you beggar. Thy will be done O Lord, not my will. Then there would be no reason to complain. **Wahe-Guru**. Everything is for God.

I, the all merciful, being descend as man assume a human form with human attributes and appear before you as a God man just to receive your homage of love and worship of devotion.

As the wind moving everywhere rests even in **Akash**, so do all things rest in me - (according to Gita).

ज्ञानअग्नि दग्धे कर्म। आत्माकार जिसने परमात्मा के सम्पूर्ण स्वरूप का अनुभव लिया है वो अपने को कर्मों में लिपायमान नहीं करता है। किसी भी कर्म से आनंद और शान्ति नहीं मिल सकती क्योंकि वो साधन रहित है; ब्रह्म साधन रहित ही पाये।

हर कर्म का फल होता है। हरेक कर्म बन्धन है मुक्ति नहीं। हर कर्म में दुख है जैसे का काठकोल में धुंआ (गीता)

हरेक जड़ चेतन के अंदर परमात्मा विद्यमान है। भगवान अपनी जादूई शक्ति से सभी वस्तुओं को अपने चारों ओर इस प्रकार घुमाता है जैसे एक ईंजन अपने पीछे लगे डिब्बों को गोलाकार में घुमाता है। यानि सारी सृष्टि का चक्र परमात्मा को केन्द्रबिन्दु में रखकर घूम रहा है।

ना कुछ ग्रहण, ना कुछ त्याग, पर जो बन आये वो खुशी से स्वीकार करो। निरीच्छा। चाहना हमको भिखारी बना देती है। तेरा सोचा ही होय, मेरी मर्जी ना चले। ऐसा भाव रखने से सब शिकायतें खत्म हो जाएंगी। वाहेगुरु सब कुछ मेरे भले के लिए ही हो रहा है।

मैं वो परमकृपालु ईश से जीव बनकर आया हूँ और मैंने मनुष्य का रूप और उसके गुणों को धारण किया है और तुम्हारे सामने खुदा होकर तुम्हारे प्यार और श्रद्धा भरी भक्ति और पूजा को ग्रहण स्वीकार करने आया हूँ।

गीता में भगवान ने कहा है कि जैसे हर जगह विचरण करने वाली वायु आकाश में भी व्याप्त है, वैसे ही सारी सृष्टि (हर वस्तु) मुझ में वास करती है।

Letter No. (10)

The absolute (**Nirakar**) cannot be worshipped. So we worship manifestation. Such a one as has our own nature. Jesus or Gautama had our nature. They became Christ and Buddha, so can we and so must we be. Christ and Buddha were the names of state to be attained. Jesus and Gautma were the persons to manifest it.

Inspect, observe and watch or do anything but do all in the light of your true self that is to say forget not that. Yourself is above all that and beyond all want. The universe is ours to enjoy, but want nothing. To want is weakness. Want makes us beggars and we are God, the king not beggars.

Speak only when you are heard with heart. Gita 18/73. Destroyed is my delusion and I have realised my self through thy grace. I am firm now in **Nishtha**. My doubts and confusions are gone, I will do thy word. In your case and in everybody's case it will have fulfilled its purpose only when it will have removed our confusions and doubt.

Think truly that God is more prepared to receive man than a man can ever be to come to God and this is what God longs for more than anything else, that man act in such a way that he can pour his grace unceasingly into him and always increase good within him.

पत्र संख्या (10)

निराकार को पूजना सम्भव नहीं है, इसलिये हम साकार की पूजा करते है जो कि हमारे ही जैसा है। ईशु और गौतम हमारे ही जैसे थे। वे क्राइस्ट और बुद्ध बने ऐसे ही हम भी बन सकते हैं और हमें बनना भी चाहिए। क्राईस्ट और बुद्ध उस अवस्था का नाम है जिसे पाना है। ईशु और गौतम वो व्यक्ति थे जिन्होंने इसको साकार किया।

अपने सच्चे स्वरूप के प्रकाश में कुछ भी करो चाहे जाँचो, मानो और देखो या कुछ भी पर ये मत भूलो कि तुम हर बात से ऊपर हो और हर चाहनाओ से परे हो। सारी सृष्टि हमारे ही मौज के लिये है पर इसमें कोई चाहना नहीं रखनी। चाहना ही कमजोरी है। चाहना ही हमें भिखारी बना देती है जबकि हम है भगवान, राजा पर भिखारी नहीं।

मुख से शब्द तभी निकालो जब कोई तुम्हें दिल से सुन रहा हो।

(गीता का 18 वा अध्याय–श्लोक 73) मेरे सभी संशय भ्रम का नाश हो गया है और मैंने आपकी कृपा से अपने सच्चे स्वरूप को जान लिया है। अब मैं पूरी तरह निष्ठा में दृढ़ हूँ। मेरे सारे संशय भ्रम खत्म हुए अब मैं वही करुंगा जो तुम कहोगे। तुम्हारे ही नहीं हर किसी के (मामले) विषय में तभी अपने लक्ष्य को पूरा करेगा जब यह हमारे सभी संशय भ्रम को खत्म कर देगा।

यदि सच्चाई से सोचा जाये तो यह देखेंगे कि जितनी जल्दी मनुष्य को परमात्मा को पाने की है उससे ज्यादा परमात्मा उसे अपनी बांहों में लेने के लिए उत्सुक है। परमात्मा सबसे ज्यादा इसी बात के लिए लालायित रहता है कि मनुष्य कुछ ऐसा काम करे जो वो अपनी अनन्त अपार कृपा उस पर उड़ेल दे और हमेशा ही उसके अंदर की अच्छाई को बढ़ाता रहे।

"Content with what comes to him, without effort though acting, he is not bound with actions."

He who is on the path exists not for himself but for others. While a slave to superstition despises others who are wiser tries to force them to do as he voes.

Learn to love your kind (human being) not your country.

- Legal sanctions do not bind **Atmakar**.
- Lord Buddha was a great vedantist. He never bowed down to anything. Neither **Vedas**, nor caste, nor priest, nor custom. He fearlessly reasoned. So far as reason could take him. Such fearless search for truth and such love for every living thing the world has never seen. He sought nothing for himself.

Buddha said, 'believe no books, Vedas are all humbug. I am the greatest book. Sacrifice and prayers are useless." What is the value of legal sanctions before a man, who even says that Vedas are all humbug.

Unless regard for the body is lost there is no God. Forget yourself. आप विसर्जन होय त सिमरन कहिये सोय।

Sometimes Tandon speaks as body and sometimes as pure **Atma**. (this is pure san shai). You ought to have **Nischayatmic Buddhi** first. This is called jackal with the skin of a tiger.

ज्ञानी सभी प्रयास करते हुए भी उतने में ही संतुष्ट रहता है जितना बन आता है। इसमें वह कोई प्रयास नहीं करता। वो किसी कर्म से बंधा हुआ भी नहीं है।

जो भी ईश्वर के रास्ते में चलता है उसका जीवन अपने के लिये नहीं पर दूसरों के लिए होता है।

अपने देश से नहीं बल्कि अपने जैसों (मनुष्य) से प्यार करना सीखो।

आत्माकार किसी भी कानून के गिरफ्त (बन्धन) में नहीं है।

भगवान बुद्ध बहुत ही महान वेदान्ती थे। उन्होंने कभी भी किसी वेद, जात, धर्म पंडित या प्रचलन के आगे सर नहीं झुकाया। वे निडर होकर हर बात का जवाब देते थे जहाँ तक वे चाहते। सच के लिए ऐसी निडर खोजना और सभी जीवों से असीम प्रेम, आज तक कोई और देखने में नहीं आई। उन्होंने अपने लिये कभी कुछ भी नहीं चाहा।

बुद्ध ने कहा कि ग्रंथों का भरोसा नहीं करो। सारे वेद धोखा है पाखण्ड है। सभी प्रार्थनाएं और त्याग-बलिदान निरर्थक है। मैं ही सबसे बड़ा ग्रंथ हूँ।"

उस व्यक्ति के सामने क्या मायने रखते होंगे जो यहाँ तक कहता है कि वेद सारे पाखण्ड है।

देह अध्यास गलाय बिना भगवान नहीं मिलेगा। अपने को भूलना ही होगा। आप विसर्जन होय त सिमरन कहिये सोय।

कभी टंडन अपने को शरीर जान कर बात करता है कभी आत्मा। यह संशय आत्मिक बुद्धि छोड़नी ही पड़ेगी। ऐसी अवस्था को ही शेर की खाल में भेड़िया भी कहते हैं।

I am not interested to send people to some unknown region called heaven after death, but I try to bring down heaven here and now. Alas you do not realise that the world is heaven i.e. **Sukh Sagar**. Evil is absence of good, error is absence of guidance, darkness of light, blindness of sight, deafness of hearing. Therefore conclude that there is no evil. Evil is non-existent. Evil does not exist, only God exists. The whole creation is purely God.

The deniers of Christ were said to be dead, though apparently living but in relation to the people of faith (believers). They were dead, blind, deaf and dumb.

They have eyes but see not, ears but hear not and I healed them (Christ).

Life of faithful and death of faithless. In the sun, there is no darkness, no morning, noon, or evening, it is all with the earth. In me as in sun, there is no past, future, present, today, tomorrow, yesterday, sin or sorrow.

मैं तुमको मरने के बाद स्वर्ग अन्जान जगह में तुम्हें भेजूंगा, इसमें मेरी रुचि नहीं है। पर मैं तुम्हें यहीं पर अभी के अभी स्वर्ग का आनंद दे दूंगा। काश तुम इस बात का अहसास कर सको कि संसार एक स्वर्ग है-सुख सागर है। बुराई केवल अच्छाई की कमी है जैसे भूल नीति की, अंधकार प्रकाश की, अंधापन दृष्टि की, बहरापन सुनने की कमी से है। इसका तात्पर्य यह निकलता है कि बुराई बनी ही नहीं है। बुराई का अपना अस्तित्व नहीं है। बुराई है ही नहीं, है ही भगवान। सारी सृष्टि केवल भगवान है।

भले वो जिंदा दिखाई दे रहे, पर क्राईस्ट को न मानने वालो को मुर्दा करार दिया गया। वे उन लोगों की तुलना में मरे हुए अंधे, बहरे और गूंगे कहाए जो लोग उसे मानते थे, जो विश्वासी थे।

उन के पास आँखे थी पर दिखता नहीं था, कान थे पर सुनते नहीं थे पर मैंने उन्हें ठीक कर दिया है (क्राईस्ट)

विश्वासी का जीवन और अविश्वासी की मौत है। जैसे सूर्य में अंधकार नहीं है, ना सुबह, दोपहर या शाम पर वो सब धरती के साथ लागू है। वैसे ही मेरे में भी कोई अतीत, भविष्य, वर्त्तमान, आज गुजरा दिन या आने वाला कल, पाप या दुख नहीं है।

Letter No. (11)

Begumpur
8th Feb. 1964

My dearest own selfless self.

I always read your letter and this time saw your letter of the 5th instant. I wish you to stand on your own legs. Do your best and leave it to God, the rest you want to take help from Gita. But you know that want makes us beggars. Want is weakness. Desirelessness should be your motto.

You will positively get what you deserve. Rely on **Prarbudh**. Self mastery is essential for self realisation. Strength is life, weakness is death.

Everything will come to you if you only have faith. You should have faith in God, but you should not leave him to do what you should have to do as His instrument. Faith should not bring helplessness.

Pray, as if everything is dependent on God and work as if everything depends on you. Achievement is possible by self-help and not by mercy of God or any goddess.

Neither seek, nor avoid, but take what comes.

I cannot spare much time. Please excuse me, but I hope you will find this letter as encouraging as you wanted and deserved pray not. rather act.

Your ownself.

पत्र संख्या (11)

बेगमपुर
8 फरवरी 1964
मेरे प्रिय निज स्वरूप,

मैं हमेशा तुम्हारे पत्र पढ़ता हूँ और इस बार मुझे जो तुम्हारा पत्र मिला वो पाँच फरवरी का था। मैं चाहता हूँ कि तुम अपने पैरों पर खड़े हो जाओ। अपना पूरा प्रयास करो और फिर भगवान पर छोड़ दो, जो कुछ भी चाहो तो तुम गीता से मदद ले सकते हो। पर तुम शायद जानते हो कि चाह हमें भिखारी बना देती है। चाहना कमजोरी की निशानी है। तुम्हारा लक्ष्य निरीच्छा होना चाहिए।

तुम्हें वह अवश्य ही मिलेगा जिसके तुम काबिल हो। अपनी प्रारब्ध पर विश्वास रखो। आत्म साक्षात्कार के लिए स्वयं पर जीत पाना जरूरी है। शक्ति ही जीवन है, कमजोरी मौत है।

तुम्हें अगर विश्वास है तो सब कुछ तुम्हारे पास चल कर आयेगा। तुम्हारे को भगवान पर विश्वास होना चाहिए पर जो तुम्हें उसके निमित्त बन कर करना चाहिए, उसे उसके (भगवान के) भरोसे छोड़ कर बैठ नहीं जाना है। विश्वास असहायतापने को जन्म नहीं देता।

ऐसी वन्दना करो जैसे सब कुछ ईश्वर पर निर्भर है और कर्म ऐसे करो जैसे सब कुछ तुम पर निर्भर हे। ईश्वर प्राप्ति स्वयं के पुरुषार्थ से मिलता है न कि किसी भी देवी देवताओं के रहम से। न कुछ ग्रहण, न कुछ त्याग, पर जो बन आये उसे खुशी से स्वीकार करो।

मैं ज्यादा वक्त नहीं दे सकता इसलिए माफी चाहता हूँ पर आशा करता हूँ कि इसमें तुमको वो प्रेरणा, उमंग मिलेगी जो तुम चाह रहे थे और जो तुम्हारा हक है। प्रार्थना न करें पर कार्य करें।

तुम्हारा अपना आप

भगवान स्वामी श्री रमण महर्षि के वचन

मन– मन आत्मा की बेमिसाल शक्ति है, जिसके जरिए हमारे अंदर ख्याल उत्पन्न होते हैं। इसलिए मन ही ख्यालों का स्वरूप है। जैसे (कोड़ी अरा) मकड़ी अपने अंदर से जाल की तंते बाहर निकालता है और अपने ही अंदर खींच कर निगल जाता है। उसी तरह मन भी अपने आप में से जगत बाहर निकालता है और फिर अपने आप में लीन कर देता है। जब मन बाहर आता है तो जो उसकी एकता आत्मा से है, उसका त्याग करता है, तो जगत सत्य वस्तु प्रतीत होने लगता हे। सब में पहला और महत्वपूर्ण ख्याल जो मन में उठता है, वो है 'मैं' (ego) और उसके बाद ही अनगिनित ख्याल उठते हैं। पहले मैं का ख्याल उत्पन्न होने के बाद ही 'तुम' या 'वो' के ख्याल उत्पन्न होते हैं जैसे सारे ख्याल 'मैं' से ही उत्पन्न होते हैं क्योंकि मन ख्यालों की (मजुमी) समूह के सिवाय दूसरी कोई भी चीज नहीं है। इसलिए 'मैं कौन हूँ' 'Who am I' यह जाँच करने से मन शांत हो जाता है। पर यह जाँच करते अगर दूसरे ख्याल उठें तो उनको उत्पन्न होने नहीं दो। बल्कि अपने अंदर में और भी अधिक जोर से पूछो कि यह ख्याल भी किसको आ रहे हैं?

आत्म ज्ञान

तुम ब्रह्म हो

- That are thou.
- To think is not your real nature when error is

found, it is foolish to find yourself unnecessarily, by way of thinking do not feel depressed. If you entertain such thoughts they will over hurt you head long like a treacherous friend.

सोचना तुम्हारा स्वभाव नहीं है। जब गलती मालूम हो जाती है तो उस पर बेवजह सोचना बेवकूफी है। निराश मत महसूस करो। अगर निराशावादी विचारों का स्वागत किया तो वो तुमको अविश्वसनीय दोस्त की तरह तुमको बहुत कष्ट पहुंचाएंगे।

1. घड़ी इक विसरूं राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय।
2. मैं ना
3. प्रारब्ध
4. मौत की इच्छा
5. इच्छा मात्रम अविद्या

- Just like actor play your part very well एक अभिनेता की तरह अपने पात्र को बखूबी निभाओ।
- अभिमान रखकर कोई भी कर्म मत करो, पर प्रेम से
- सर्वोपरि भक्ति है हर हाल में खुश रहना, सदैव मुस्कुराते रहना।
- वैराग्य पक्का धार कर, मत भूल विषयासक्त हो तृष्णा न कर, हो जा सुखी, मत भोग में आसक्त हो।

1. तृष्णा जहाँ हो, बस जान ले संसार ही
   होवे नहीं तृष्णा जहाँ, संसार से सो पार ही।

2. चलो चलो सबको कहे, बिरला पहुंचे कोई।
एक कंक और कामनी, दुरगम गाती दोई।।
(कठित रुकावट)

3. आये थे जिस काम को, भूल गए वह बात।
किया ले मिलेंगे राम, सिड (जिसके) ख़ाली दोनों हाथ।।

4. सपने जो संसार थी, छो मोहियो मन मस्ताने आहे।
घर तर माडियूं महल न पहिंजा, तन मन धन बेमानो आहे।।
चइन दुहिन जो चेत चमन मा, बुलबुल लाह बेमानो आहे।
जाग मुसाफिर कर सा बाहो, थियणो नेठ रानो आहे।
दुनिया जंहिखे चजी थो, सा हाण मुसाफिर खानो आहे।।

5. सदैव अंदर का आनंद लो, अगर दूसरों से उसकी उपहार की तो मज़ा गया। अंदर से खाली हो जाओगे। ये ऐसे होगा जैसे पानी बंद करके फिर बहा देना

– यार त न्याज वणे धो पर नाज़ न।
हालतें नहीं बदलेंगी, पर आप हालत से बदलो। बाहर से तो सब कुछ रखना है।
अंदर में अकेला, बाहर से मेला।

– आजाद करो मन को न कि शरीर को। मन आजाद होगा आत्मा की रोशनी से।

1. मन में जुड़कर बैठना (मन में जुड़ी विहाण)

2. सत्य की बातें सुनो।

3. सत् शास्त्र पढ़ना।

– ये सौदा नहीं है बक-बक का।
मन की वृत्तियाँ कभी भी बंद नहीं होगी।
मन के फुरने कभी भी बंद नहीं होंगे।

– जो तेरी इच्छा वो मेरी इच्छा। जिस दाता ने जन्म दिया है, वो खाना भी देगा। इसलिए चित्त में कोई भी चिन्ता या फिक्र नहीं करा करो।
वेई सा वेई, बाकी रखु रहत सां
सांई सुप्रियनखे, पस अंदर पेही
हीय मातखा देही, मोटी लिंदइ कीत की।

– अपनी जानकारी कैसे हो?

अपने मन की जानकारी कर्मों से ही पड़ती है। किसी को गुस्सा लगता है, वो गुस्सा, क्रोध कहाँ से आया? कहीं बाहर से नहीं आया? वो मन के भीतर था जो बाहर निकला। इसी तरह हमारे कर्म हमको बताते हैं कि तुम क्रोधी हो, स्वार्थी हो या कुछ और हो।

– फल पर नहीं रखो (भरोसा)
सुभाणे तन रखु कुछ भी, सुभाणे मां न कुछ सरंदो
करणो थई सो कर हाणे, हीअर मा ही सभु कर दो

1. सुभां जी न सुध कहिखें, सुभां मां थो सुभाणो धिय

सभा आखिर कालु वणजी, अची ओचतो मथां किट दो।

2. पल-पल थी लंघन, दीहड़ा, दीहड़नामां बणन साल था

आहिस्ते इएं हरको मौत दे, समझ सियाणा व भी सिरंदो।

3. अजु भी पियो ड़िसी अखियूँ अखिडन कीअ काल पियो कराए

खणी तंबु सो तूं प्यासी, आधार हरको तरंदो।

पता है कि लोग दुखी होते हुए भी संसार की इच्छा करते हैं। सो क्यों? सुख की आशा से और उस क्षण भंगुर (नाश होने वाले) सुख के सिवाय ब्रह्मआनंद के अनुभव न होने के कारण।

1. हर हालत में ज्ञान, भक्ति और कर्म जरूरी है।
2. न वो मरे, न ठगे जाए, जिनके राम वसे मन माहि।
3. सिमरण - आप विसर्जन
4 झप - catch (नानक नाम **झपै** इक बार)
5. निज मन - सफा खाली मन। एक रस सिमरण उसी को कहते हैं।
6. कोट कर्म बन्धन के मूल
7. कर्मी आवे कपड़ा, न दरी मोक्ष द्वार।
8. सो साहब चिंता करे, जिस उपाया जग।
9. कर्म करत होवे निहकर्मी
10. लाली मेरे लाल की, जित देखां तित लाल।

लाली देखन मैं चली, तो खुद भी हो गयी लाल।

11. एक दरवेश को किसी ने ये गालियाँ दी और संत ने मतलब कहा -

पापी – पिया को पा

नामुर्राद – नाम को आराध (बिना इच्छा के)

हरामी – हरि में आराम

बदमाश – खराब मांस, यानि शरीर में नहीं अटको।

- जब दिल में चिंगारी लगे तो फिर 'आराम हराम'।
- समाधि - संकल्प विकल्प का त्याग। सर्व इच्छाओं को त्याग।
- सच्चा फकीर वही है जो हर फिक्रों से खाली है।
- सच्चा पुरुषार्थ वही है जो पुरुष परमात्मा को पाने के लिए किया जाता है (पुरुष + अर्थ)
- परमार्थ (परम + अर्थ) परमात्मा (ऊंचा) को पाने के लिए किया गया अर्थ (मेहनत)
- परमात्मा - सब आत्मा ही है - (पर+म+आत्मा)
- ज्ञान लेने का अर्थ है विकारों का त्याग करना।
- Objects appear when you think of it. जैसे संकल्प होंगे वैसा ही संसार होगा।
- 'आत्मा आहे इहो विश्वास करियो'

यह विश्वास रखो कि आत्मा है बाकी इस मुख को चुप

कराने के लिए 'ओम' या दूसरा कोई ऐसा शब्द लेकर जाप करो।

- तुम्हारा मन है Postman इसलिए तुम्हारे पास हर तरह की (चिट्ठी) समाचार के अलावा दूसरी कोई (चिट्ठी) receive ग्रहण ही मत करो।
- इन्द्रियों (आत्मा) और मन का सम्बन्ध आपस में मत समझो।
- मूढ़ व्यक्ति वे हैं जो मन, इन्द्रियां और शरीर को नहीं जानते।
- मन में जैसे ही फुरना उठे, वैसे ही वहीं पर खत्म कर दो।
- जब समझ रहे हो कि ईश्वर है तो उसको प्रगट करो। अगर समझते हो कि आत्मा है तो उसको अनुभव करो यही विचार बार-बार करो कि मैं आत्मा हूँ।
- तृष्णा एक आग है।
- सच त्याग है आप विसर्जन और अपनी खुदी को मारना (अहंकार मारना) यानि 'मैं ना'।
- जो तेरी इच्छा है वो मेरे लिए अच्छा।
- त्याग के अहंकार का भी त्याग करो।
- चाह ही इंसान को ब्रह्म पद से भी गिराती है।
- इलाज करो पर इंतजार नहीं करो।
- आज का दिन अच्छा बिताओ, पता नहीं कल हो न हो।

- विश्वास करामातों की करामात है।
- मैं शरीर नहीं हूँ, फिर शोक किस बात का।
- सो साहब चिंता करे जिन उपाया जग।
- वो राजा गरीब (खुटैला) है जिसको विश्वास नहीं, पर भूखा भी भरपूर है विश्वास से। जिसको अन्न के दाने जितना भी विश्वास है उसके लिए परमात्मा सब कुछ करता है।
- दुख एक उत्तम से उत्तम वस्तु है जो आँखे खोलता है।
- हरेक अपने साथ return ticket लेकर आया है।
- मन अभ्यास और वैराग्य से हाथ आता है। अभ्यास यह कि 'मैं आत्मा हूँ', 'ब्रह्म सत्य', आत्मा का चिन्तन। वैराग्य यह कि 'मैं ना', 'जगत मिथ्या', देह से अनासक्त।
- मन का सूतक लोभ है।
- मन का नौकर नहीं, मालिक बनो।
- पैसे तुम्हारे मर्जी से नहीं मिलेंगे और न तुम्हारी मर्जी से रहेंगे।
- अपना गुरु तुम खुद है।
- Money is useless

माया से पलंग खरीद सकते हो पर नींद नहीं।।

माया से चश्मा खरीद सकते हो पर नजर नहीं।।

माया से सब सुख-सुविधा के साधन जुटा सकते हो, पर

शांति नहीं।।

माया से डाक्टर और दवा मिल सकती है पर स्वास्थ्य, जिंदगी नहीं।।

माया से सत्कर्म कर सकते हैं पर स्वर्ग और नर्क से बच नहीं सकते।।

माया है सांप और सांप को हाथ करोगे तो डंक जरूर लगेगा।

इसलिए माया को हासिल करने से या उसके बारे में सोचने से परेशानी ही हाथ आएगी इसलिए माया से मोह निकालना है। माया हमारे लिए है पर हमारी नहीं है।

दादा भगवान के अनमोल वचन

Anmol Vachan

Anmol Vachan

1. The only God to worship is the human soul in the human Body.
2. Him I call a Mahatma whose heart bleeds for poor.
3. He who knows how to obey, knows how to command.
4. Know partially to be the chief cause of evil.
5. Die you must, But here is a great idea to die for, and it is better to die with a great idea in life.
6. Result of every work is mixed with good and evil.
7. He who wants to serve lord, must serve his children first in this world.
8. What good is it, if we acknowledge in our prayers that God is the father of us all and in our daily life, not everyone as our brother.
9. The mind uncontrolled will drag you down, forever and will kill you, and the controlled mind will save you and guide you.
10. If there is nay cry, it is slavery. Everyone wants to command and no one wants to obey. And this is owing to the absence of that wonderful Brahmacharya. First learn to obey. The command will come itself. Always first learn to be servant and then will be fit to be a master.

अनमोल वचन

1. मनुष्य के शरीर में वास कर रही आत्मा ही एकमात्र भगवान है जो पूजनीय योग्य है।
2. मैं उसे ही महात्मा कहता हूँ जिसका हृदय गरीबों के लिए खून के आंसू रोता है।
3. जिसे आज्ञा पालन करने आती है, वह नेतृत्व भी करना जानता है।
4. अधूरा ज्ञान ही पाप का मूल कारण है।
5. तुम्हें मरना तो पड़ेगा ही। पर यहाँ तुम्हारे मरने के लिए एक महान विचार (उद्देश्य) है और बेहतर तभी है जब हम किसी महान उद्देश्य के लिए अपनी जान दे।
6. हर कर्म के फल में पाप और पुण्य का मिश्रण है।
7. ईश्वर की सेवा करना चाहते हो तो पहले इस धरती पर उसके जनो की सेवा करनी चाहिए। (जन सेवा ही ईश्वर सेवा है)
8. अपनी प्रार्थनाओं में भगवान को पिता कह कर सम्बोधित करने से क्या फायदा जब हम रोजना जीवन में हरेक इंसान को अपना भाई करके नहीं देख सकते।
9. असंतुलित मन हमें हमेशा के लिए नीचे गिराकर मार डालेगा जबकि संतुलित मन हमें बचायेगा और हमारा मार्गदर्शन कराएगा।
10. पुकार गुलामी की निशानी है। हर कोई हुकुम चलाना चाहता है पर पालना कोई नहीं करना चाहता। इसका कारण है अद्‌भुत ब्रह्मचर्य का जीवन में न होना। पहले कहना मानना सीखे, तो नेतृत्व भी एक दिन खुद-ब-खुद मिल जायेगा, काबिल मालिक बनने के लिए पहले एक कुशल नौकर बनना सीखो।

11. There is no higher virtue than charity. The lowest man is he whose hands draw in receiving and he is the highest man whose hand goes out in giving. The hand was made to give always. Give the last bit of bread you have, even if you are starving. Immediately you will be perfect. You will be God.

12. In the world, take always the position of the giver. Give everything and look for no return. Give love, Give help, give service, give any little thing you can, but keep out barter. Make no conditions and none will be imposed.

13. Obedience to the Guru without questioning and strict observance for Brahmcharya will lead you to God.

14. Everything is ended if you forgive and forget.

15. By being pleasant always and smiling, it takes you nearer to God, Nearer than any prayer.

16. If anyone comes to you to speak ill of his brothers, refuse to listen to him. It is great sin to listen even. I that lies the germs of the future evils.

11. दया से बड़ा कोई गुण नहीं है। सबसे नीच वो इंसान है जिसके हाथ हमेशा माँगने के लिए आगे बढ़ते हैं और वही श्रेष्ठ है जिसका हाथ केवल देने के भाव से निकलता है। परमात्मा ने कर दिये हैं सदैव देते रहने के लिए। यदि तुम भूखे मर रहे हो, फिर भी तुमको अगर अपनी रोटी का आखिरी निवाला भी देना पड़े तो पीछे मत हटना। ऐसा करना पूर्णता को प्राप्त कराता है और वो वहीं का वहीं ब्रह्मपद की प्राप्ति करता है।

12. दुनिया में हमेशा दातार बनकर जीओ। सब कुछ लुटाते चलो पर वापसी की चाह मत रखना। प्रेम दो, मदद करो, सेवा करो और हर छोटी से छोटी चीज देते चलो पर सौदेबाजी से दूर रहकर। कोई शर्त मत रखना और न ही कछ लागू होगी।

13. गुरु की आज्ञा में रहना और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन हमें परमात्मा तक पहुंचाता है।

14. सब कुछ वहीं खत्म हो जायेगा जब तुम माफी देकर भूल जाओ।

15. सदैव प्रसन्नचित्त रहने से और मुस्कराते रहने से हम ईश्वर के उतने नजदीक पहुँच सकते हैं जितना हमें कोई प्रार्थना भी नहीं पहुँचा सकती।

16. यदि कोई तुम्हारे पास अपने भाईयों के बारे में निंदा करने आता है तो तुम उसे सुनने से साफ इन्कार कर दो। निंदा सुनना भी पाप है। उसी में भविष्य के पापों के कीटाणु रहते हैं।

17. Never talk about the fault of others no matter how bad they may be. You never help him by telling about his faults. You do him an injury and injure yourself as well.

18. Resist all evils, mental or physical.

19. Nothing should be done in haste. Purity, patience and perseverance are the three essentials to success and above all love. All times is yours and there is no indecent haste.

20. He rises whom he raises and he falls whom he bring down.

21. Truth never comes where there is lust, fame and greed.

22. The Atma is silent.

They who know Atma are always silent

About the deeper mysteries.

"They who talk much, know little.

They who know, Talk little.

The great mysteries are unspeakable."

17. किसी भी गलती के विषय में बात मत करो चाहे वो कितनी भी बड़ी क्यों न हो। किसी की गलती उसे बता कर तुम उसका कोई भी भला नहीं करते बल्कि उसे आघात पहुँचाते हो और साथ में अपने को भी करते हो।

18. सभी पापों से बचो चाहे वो तन से हो या मन से।

19. जल्दबाजी में कोई भी काम नहीं करना चाहिए। शुद्धता, धैर्यता और सहनशीलता कामयाबी की तीन जरूरते हैं और सबसे पहले प्रेम। सारा समय तुम्हारा है, इसलिए बेवजह जल्दबाजी की जरूरत नहीं है।

20. जिन्हें भगवान चढ़ाता है वहीं उठते है और जिन्हें वह नीचे उतारता है वे गिरते हैं।

21. जहाँ पर हवस, कीर्ति और लोभ है वहाँ सच्चाई कभी नहीं आ सकती।

22. आत्मा मौन है, शांत है।

जो आत्मा को जानते हैं वो उसके गहरे रहस्यों के विषय में हमेशा शांत रहते हैं।

जो जितना बोलता है वो उतना ही कम जानता है

जो जितना ज्यादा जानते है वो उतना ही कम बोलते हैं इसलिए जो बड़े रहस्य वो अवर्णनीय हैं।

23. **Failure**

Bhog and Ahankar are two of the most fascinating forms of maya and live above thee.

Which God shall we worship?

God is the Atma, the self revealing spirit, highest we have received from God in life.

24. **Meeting the master**

O pilgrim on the path

With pure heart, receive the lord,

You will become as you desire.

Be obedient to your Vivek,

Search and Search,

Not surrender till the quest is achieved.

Give up the game of chasing shadows.

● ● ●

23. **हार**

माया के दो भयानक रूप हैं भोग और अहंकार - इनसे ऊपर होकर रहो।

हम कौन से भगवान की पूजा करें?

भगवान तो आत्मा है, अपने स्वरूप को पहचान देने वाली शक्ति। सबसे ऊँचा है, सबसे बड़ी हम पर ईश्वरीय देन है।

24. **मालिक से मुलाकात**

हे राह के मुसाफिर

शुद्ध हृदय के साथ परमात्मा का स्वागत कर,

तुम वैसे बन जाओगे जैसा तुमने सोचा है।

अपने विवेक के प्रति जागरुक रहो,

खोजो और ज्यादा खोजना करो

और तब तक घुटने न टेकना जब तक खोजना पूरी नहीं होती। परछाईयों का पीछा करने का खेल अब छोड़ दो।

● ● ●